धरोहर



सर्वेश्वरदास नगर पालिक निगम उ.मा. शाला

राजनांदगांव



उद्धरेदात्मनात्मानम्

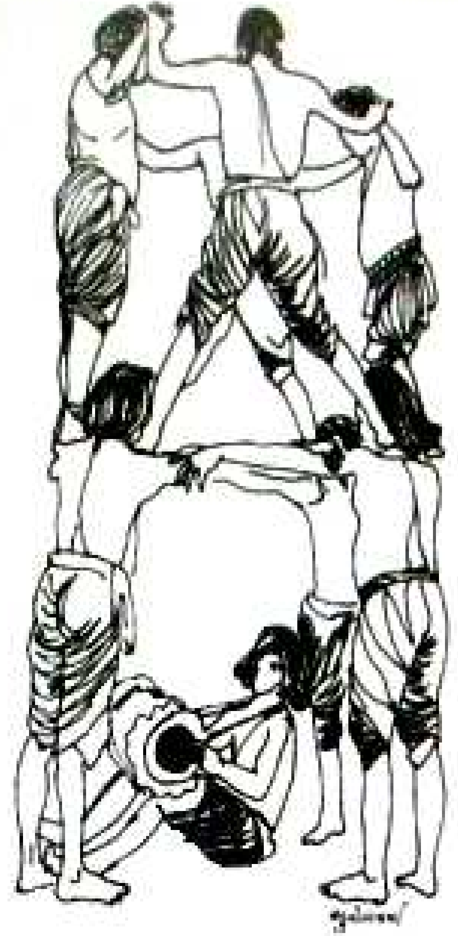
गीता



या कुन्देन्दुतुषार हार धवला, या शुभ्रस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्ड मंडित करा, या श्वेत पद्मासना,
या ब्रम्हाच्युत, शंकर प्रभृति भिः देवै सदावन्दिता,
शा मां पातु, सरस्वती, भगवती निःशेष जाड्यापहा ।
गुरु ब्रम्हा, गुरु विष्णु, गुरुदैवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात, परम ब्रम्हा, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।



धरोहर



संपादन राजेन्द्र वर्मा

अजय पांडे

विमल गुप्ता

संकलन

ललित ठक्कर

राजेन्द्र बहादुर

मुख पृष्ठ एवं रेखांकन

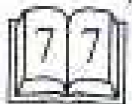
डॉ. सुनीता वर्मा

हमारे अनन्य सहयोगी-

1. प्राचार्य एवं स्टाफ सर्वे.न.पा.नि.उ.मा.शाला
2. श्री बल्देव सिंह भाटिया, समाज सेवी
3. श्री सुभाष अग्रवाल, राजनांदगांव
4. श्री कमलेश साहू (माँ कम्प्यूटर)
5. श्री प्रदीप शर्मा, जमाल, मुकेश शर्मा (लोरी स्टूडियो)
6. श्री रवि डी. कोण्डैया
7. श्री कृष्णा यादव, सर्वे.न.पा.नि.उ.मा.शाला

मुद्रक - शारदा आफसेट, रायपुर

फोटो एवं विडियोग्राफी - लोरी स्टूडियो, राजनांदगांव



संपादकीय.....

जब कोई भी मनुष्य
अनासक्त हो
चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन
नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है
नियति नहीं है पूर्व निर्धारित
उसे हर क्षण
मानव निर्णय
बनाता मिटाता है.

धर्मवीर भारती

Batch 77 का यह आयोजन ऐसी ही एक चुनौती का हिस्सा है. हमें याद है, सन् 2002 में जब हम 25 वर्ष पूरे करने जा रहे थे, तब यह प्रस्ताव और आया था हम अपनी – अपनी दुनिया में इतने व्यस्त और मस्त रहे कि इसे आयोजन का रूप नही दे सके.

33 वर्षो बाद एक बार फिर हम सब एक जूट हुए .... प्रतिज्ञा लेकर आगे बढ़ गए, 7फरवरी रविवार का दिन सर्वाधिक महत्वहपूर्ण रहा जब भिलाई से भी हमारे सहपाठियों ने बैठक में भाग लिया और आयोजन को अंतिम रूप दिया, उस मुलाकात में 24 लोग उपस्थित थे.सभी का उत्साह देखकर लग गया था आयोजन सफल होगा.

सारे विद्यार्थीयों को ढूंढ निकालने का अभियान किसी शोधकार्य से कम महत्वपूर्ण नही था. सबसे बायोडाटा,फोटो,लेख एकत्रित करना निसंदेह एक दुष्कर कार्य था,दोस्तो से मिलने और उन्हें जानने की उत्कण्ठा ने सब कुछ संभव कर दिया.

हमारे गुरूजनों का उत्साह हमसे कहीं अधिक परिलक्षित हुआ इस आयोजन में स्व.श्री के.पी.साव प्राचार्य, स्व.श्री डी.एस.साव, श्री रामलाल भौतमांगे तथा सहपाठियों स्व.श्री मोरध्वज साहू, चंद्रिका प्रसाद, एम.देवेन्द्र कुमार, रविन्द्र पटनायक हमारे बीच नहीं रहे हम उन्हें श्रद्धांजली देते हैं हमे उनकी अनुपस्थिति सालती रही ठीक उसी तरह जैसे स्कूल में गांधी सभा गृह का न होना.

और अंत में मिले सुर मेरा – तुम्हारा, तो सुर बने हमारा, की तर्ज पर हमारा यह प्रयास आपकी स्मृतियों का हिस्सा बने तो आयोजन सफल होगा...

संपादक मंडल

विमल गुप्ता, अजय पांडे, राजेन्द्र वर्मा

हमारे प्रेरणा स्त्रोत
आदरणीय गुरूवर की डायरी से ...



तुम्हें जो काम सौंपा गया है,
उसे पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से सम्पन्न करो,
यही सच्ची ईश्वर पूजा है।

स्व.श्री. के.पी.साव
हमारे प्राचार्य

आशीर्वचन

Batch 77 गणित समूह के छात्र आज अपनी शाला में एकत्रित होकर अपनी कक्षा की भूली बिसरी यादों को पुनः संजोते हुए परस्पर छात्र जीवन की भावनाओं का जो आदान–प्रदान कर रहे हैं – देखकर मुझे अपने छात्र जीवन की यादें ताजा हो रही हैं। काश: यह समय आगे नहीं बढ़ा होता ... निर्मलमन की कोमल भावनाएं शायद आज भी जीवित होतीं।



Batch 77 मेरे शिक्षकीय जीवन की शुरूवात है, मैं इसे कभी नहीं भूल सकता हूं। मेरा मन इस बैच के सभी आज के नागरिकों को अनेकों बधाइयाँ व ढेरों शुभकामनाएँ देने के लिए आतुर है।

यु.एस.पालीवाल
प्राचार्य
सर्वेश्वर दास न.पा.नि.उ.मा.शाला,
राजनांदगांव



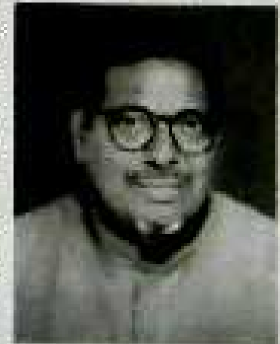

आशीर्वचन



आज का दिन मेरे लिये -
जिन्होंने मुझे इस मान सम्मान
के लिये हकदार समझा,
मैं उन बच्चों को आशीर्वाद देता हुं,
जो मुझे इस स्थान के लिये चुना,
मैं अभारी हुं, शिक्षक बंधु से,
जिन्होंने मुझे अपने साथ होने का एहसास कराया
यह एक अच्छी बात है।
उन बच्चों के लिये, जिन्होंने अपने
पिता तुल्य बुजुर्ग शिक्षकों का,
मान रखकर अपने जीवन में,
आगे उंचाई पर जाने का मार्ग,
सरल कर लिये साथ ही
आशीवाद भी पा लिये
इसी के साथ

एन.के. श्रीवास्तव

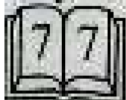
"आशीर्वचन"



मैं डी.आर.यादव सन् 1963 में शाला में आया था, एक कच्ची मिट्टी की तरह शाला में मुझे मेरे गुरूजनों और प्रिय छात्रों की यादगार सीख मिली। मैं Physics, Chemistry और mathematics तीनों विषयों के अध्यापन करता रहा हूं। लेकिन Chemistry के अध्यापन के लिए मुझे अधिक समय मिला। तीनों विषयों में समान दक्षता रही हैं। बोल चाल की भाषा में सिनेमा और टी.वी. में कहा जाता हैं डांस, ड्रामा, से दैनिक जीवन में आपकी Chemistry ठीक ठाक रही। इसी Chemistry अध्यापन में सूत्र जमाते जमाते मै एक पथ में चला गया और मेरी Chemistry योग और आध्यात्म में जम गई। आज आशीर्वचन में मैं इस 'नवीन' डी.आर.यादव की ओर से कुछ सूत्र प्रस्तुत कर रहा हूं :-
गीता से :-

अ. यदा-यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्य हम्॥
स. परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

डी.आर.यादव





"आशीर्वचन"



सर्व.दा.न.पा.नि.उ.मा.शाला, राजनांदगांव के सन् 1977 के कक्षा एकादश 'अ' (गणित) के भूतपूर्व छात्रों का यह अभूतपूर्व सम्मेलन एक अभिनव कार्यक्रम हैं। समय के इस लम्बे अन्तराल (1977 से 2010 – 33 वर्ष) में आपने अपनी योग्यता, परिश्रम, लगन से समाज में स्वयं को एक प्रतिष्ठित नागरिक के रूप में स्थापित किया हैं, जो कि शिक्षा का एक मूलभूत उद्देश्य भी हैं।

अपने विद्यार्थी जीवन में आप परस्पर किस प्रकार व्यवहार करते थे ? किस प्रकार हंसी–मजाक करते थे ? किस प्रकार शरारत करते थे ? किस प्रकार भविष्य की योजनाएं बनाते थे ? सम्मेलन के इन क्षणों में, उन सब बातों की यादें ताजा हो जायेंगी । आप अद्भुत आनन्द और उल्लास की लहरों के बीच स्वयं को पायेंगे।

आपके इस कार्यक्रम को देखकर मुझे भी अपना विद्यार्थी जीवन याद आने लगा हैं और क्षण भर के लिये ही सही, मैं अपने विद्यार्थी जीवन के उस कल्पना–लोक में खो गया । सचमुच ही किसी भी व्यक्ति के लिये, उसके विद्यार्थी जीवन के स्मृति, उसे आनन्द से रोमांचित कर देने के लिये पर्याप्त होती हैं। आपने समय रथ–चक्र को पीछे घुमाकर पुनः अपने आपको, उस विद्यार्थी जीवन के समय में स्थापित करने का प्रयास किया हैं।

आपने आनन्द और उल्लास के इन क्षणों में मुझे आमंत्रित कर गौरवान्वित किया हैं। आपके इस सम्मान के लिये मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। मैं अपने हृदय के अन्तराल गहराइयों से कामना करता हू, कि आप सब का पारिवारिक जीवन वर्षा के प्रवाह की भांति वेगवान, शरद के धान्य की भांति परिपूर्ण हों । जीवन की समस्त खुशियां आपको लब्ध हो, आप समाज के अग्रगति में अपना योगदान प्रदान करते रहें।

इति शुभमस्तु ...

जी.एस.श्रीवास्तव

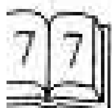
"आशीर्वचन"

33 वर्ष बाद, एक बार फिर आप सभी के बीच खुद को पाने की सोच मात्र से अभिभूत हूं। मैं रोमांचित हूं, बैच–77 के सभ्रान्त नागरिकों के साथ पूरे दिन भर गुजारने की कल्पना मुझे रह–रह कर उन यादगार स्मृतियों को पुनः संजोने के लिए प्रेरित कर रही है जो समय की परछाइयों में धूमिल हो रही हैं।



शैक्षणिक जीवन के दौरान और उसके बाद जीवन संघर्ष की कथा अनोखी रही होगी । निश्चित ही उन पुरानी यादों को कडी दर कडी संजोना एक अनूठा प्रयास हैं। शेष जिन्दगी जीने के लिए यह पहल स्मरणीय होगी।

ईश्वर आप सभी को स्वस्थ्य रखे, उत्तोत्तर सफलता की कामना सहित ...



एम.एल.शर्मा



आर्शीर्वचन

Batch 77 (Maths Group)

के अपने छात्रों के लिए



''हर छात्र के मन में सुनहला स्वप्न पलता हैं ।
अपने छात्रों के ताने-बाने से शिक्षक,
देश का भविष्य बुनता हैं।।
गुरू-शिष्य के बीच पिता-पुत्र सा,
मधुर संबंध खिलता हैं।
33 सालों के दिर्घ अंतराल में सब बदल कर भी,
सब कुछ नहीं बदलता हैं''
अपने छात्रों के लिए असीम स्नेह के साथ ...

(मुरलीधर हरिहरनो)
मुरली हरिहरनो
नक्षत्र लोक, राजनांदगांव



77 के गणित समूह के छात्र-छात्राओं द्वारा पुनर्मिलन समारोह का आयोजन एक अनूठा प्रयास हैं।

उस समय के शिक्षक और छात्र-छात्राओं का आपस में मिलन एक सुखद आनंद हैं।

उन परिपक्व छात्र-छात्राओं को जो आज के भविष्य के पत्थर हैं, शुभकामनायें।

एम.एन.लाल

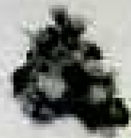
आगे बढ़ने वालों को, थोड़ा रूककर, थोड़ा पीछे मुड़कर देखना, उन धुंधले क्षणों को याद करना विश्राम दायक होता हैं। इस तरह का आयोजन उसकी आवृत्ति हैं, इससे एक नई ऊर्जा का अपने भीतर संचार होता हैं। आगे बढ़ने में बहुत कुछ पीछे छूट जाता हैं। इसलिए ऐसे आयोजनों के माध्यम से उन क्षणों को थोड़ी देर ठहरकर महसूस कर लेना आगे बढ़ने में एक नव स्फुर्ति प्रदान करता हैं।



आयोजकों की भावनाओं का सम्मान करते हुए, उन्हें सतत् गतिशील बने रहने की शुभकामनाओं के साथ ...

गजानन तिवारी





श्रद्धा-सुमन





स्व.श्री के.पी.साव



स्व.श्री आर.एल.मौतमांगे



स्व.श्री जे.के.राय



स्व.श्री डी.एस.साव



स्व.श्री अरूण गौतम

श्रद्धांजली - बिछड़े सहपाठियों को



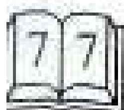
स्व.श्री मोरध्वज साहू



स्व.श्री चंद्रिका वर्मा

स्व.श्री रविन्द्र पटनायक

स्व.श्री चितरंजन साहू





बेटियाँ



एलिस जेड. मैथ्यू
(नागपुर)

गाए जाते हैं, बेटे
आ जाती है, बेटियाँ
खाद पानी दिये जाते है, बेटों में
पर लह-लहाती है, बेटियाँ ।
एवरेस्ट पर ठेले जाते हैं, बेटे
पर चढ़ जाती हैं, बेटियाँ
रुलाते हैं, बेटे
और आँसू पोंछती हैं, बेटियाँ।
कई तरह से गिराते हैं, बेटे
पर संभाल लेती हैं, बेटियाँ।
पढ़ाई करते हैं, बेटे
पर सफलता लाती हैं, बेटियाँ।
कुछ भी कहे, पर अच्छी हैं, बेटियाँ
अफसोस न करो, साथ देगी, बेटियाँ
वंश के नाम को रोशन करेगी, बेटियाँ
अहोभाग्य हो तुम्हारा जिन्हें हैं, बेटियाँ।



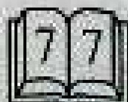
मेरी पहचान ...

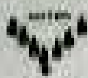
बचपन से ही सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि होने की वजह से मेरा रुझान नृत्य और संगीत में अधिक रहा । स्कूल में ही कक्षा दूसरी में हमारे आदरणीय स्व.श्री हीरालाल गुरुजी ने बालक ध्रुव का नाटक हमसे करवाया । म्युनिस्पल स्कूल में पहले सुमान साव सर ने गायन में रिजेक्ट कर दिया । फिर एक नाटक ''उत्सर्ग'' स्व.श्री जे.के.राय सर के निर्देशन में किया । महाविद्यालयीन शिक्षा के दौरान दिग्विजय कॉलेज और लॉ कॉलेज के वार्षिकोत्सव में स्व.किशोर शर्मा के साथ कई नाटकों में डॉ.शरद गुप्ता जी के निर्देशन में रोल निभाया। संगीत में रुचि ने श्री नरेन्द्र चौहान (संगीतकार) से जोड़ दिया। नरेन्द्र भाई और जार्ज ने सबसे पहले वाइडनर स्कूल में पहला नृत्य निर्देशित करवाया । फिर 26 जनवरी में हर वर्ष अलग-अलग स्कूलों में प्यारे-प्यारे बच्चों को नृत्य निर्देशित किया । उसी विधा और उन बच्चों के प्यार ने आज मुझे यह कहने पर मजबूर किया कि सच्चे दोस्त बच्चे ही हो सकते हैं । क्योंकि उनके दिल और जुबान में एक ही बात होती हैं। पिछले 25 वर्षों में आज तक शहर का शायद ही कोई घर छूटा हो जहां मेरे डांस के स्टूडेन्ट न हों । हंसते रहना और हमेशा हर हाल में खुश रहना शायद इन्हीं बच्चों ने सिखा दिया। इसलिये हमेशा हंसता रहता हूं।





ललित ठक्कर





तैंतीस बरस यूँ बीत गये



यारों कहते हैं जिंदगी एक बार मिलती है, उसमें भी बचपन, जवानी और बुढ़ापा, हर किसी कि किस्मत में आये ये भी जरूरी नहीं है । इसलिए इस जिंदगी का जी भर कर मजा लेना चाहिए ।

दोस्तों हम सभी ने जिन्दगी में कुछ न कुछ बनने का सोचा होगा । अपनी –अपनी योग्यता के अनुसार कड़ी मेहनत और मुश्किलों का सामना करके आज हम इस मुकाम पर पहुँचे है । घर – परिवार, यार – दोस्त, धंधा – नौकरी और भी कई निजी जरूरतों एवं चाहतों के बीच बेहतर तालमेल बनाकर हम सभी ने जिंदगी का भरपूर आनंद लिया है ।

आज के इस भागमभाग जिंदगी मे, समय निकालना हर किसी के लिए बहुत मुश्किल काम है । आज जब मैं लिखने के लिए बैठा तो, 33 साल पहले के बचपन की यादें फिर ताजा हो गई । जिसे हम सभी ने बचपन में बितायें है । उन खुशियों का अंदाज स्कूल में शरारत के पल, कृष्ण जन्माष्टी में रात जगना ऐसी कई बातें हैं, जिनका कहीं से दूर – दूर तक कोई मुकाबला नहीं है । इन सभी बातों को याद करके हम सभी दोस्तों को याद करते है ।



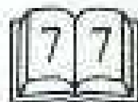
दोस्तों जिन्दगी तो मेरे ख्याल से दोस्ती के बिना अधूरी है क्योंकि हम अपनी हर खुशी और हर गम उनके साथ बांटकर पूरी करते हैं । ये तो हमारी खुश किस्मती है, जो हमें अच्छे दोस्त मिले और सुख–दुख में उनका साथ मिला, और मैं चाहूंगा कि हम सभी दोस्तों का इसी तरह हमेशा साथ रहें।

हाँ दोस्तों जब से हम लोगों ने प्रोग्राम करने का सोचा है और उसके बाद 9 मई 2010 का दिन तय किया है। तब से मुझे इस दिन का इंतजार है कि हम सभी बचपन के दोस्त फिर से एक बार पुरानी यादों के साथ मिलें ।

तैंतीस साल की यह डगर, जानी अनजानी
बदलती हुई शक्लें जानी पहचानी
एक ही नाव के सवार थे हम सब
बिखर गये पथ, कौन गया कहाँ कब?
कोई मिलता है तो लगता है एकबारगी
मिली है कहीं से खोई जिंदगी
एक–एक क्षण मन के कोने में आबाद है ...
तुम्हें भी याद होगा ... मुझे भी याद है ...

सुझाव :– हाँ दोस्तो कहते है न कि इस भाग – दौड़ की जिंदगी को सुचारू रूप से चलाने के लिए पैसा बहुत जरूरी है । और शायद यही वजह है कि सभी लोग रात– दिन एक करके पैसा कमाने में लगे हुए है । किंतु पैसा कमाने के साथ – साथ हमें अपनी सेहत का भी ख्याल रखना बहुत जरूरी हैं, जिससे हम स्वस्थ्य रह सकें । कहते है न कि जान है तो जहान है । हमेशा स्वस्थ्य रहने के लिए रोज सुबह उठना,घूमना, योगा करना तथा अच्छा व कम भोजन करना हम सभी के लिए बहुत जरूरी है । बस इन्हीं पंक्तियों के साथ पुरानी यादों को संजोय सभी सहपाठियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

विमल गुप्ता





इक रूका हुआ पल...

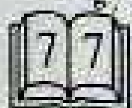


वह पल जिसका मुझे कई वर्षो से इंतजार था,मेरी सोच थी क्या यह वह पल कभी आयेगा जब हम स्कूल के सहपाठी एक साथ जमा होंगे,धरातल में यह बात असंभव लगती थी परन्तु मन के कोने में हमेशा आस थी कि वह पल अवश्य आयेगा जो हमारे स्कूली जीवन को जागृत कर जायेगा । पूरे 33 वर्ष ओझल होने के बाद वह क्षण आ रहा है, इस पल को गुलजार करने के लिये सभी मित्रों ने खुले दिल से योगदान दिया । स्कूली जीवन की धमा चौकड़ी, जिसके साये में 9–10– 11 वीं कब गुजर गया पता ही नही चला, छोड़ गया तो आस का वह पल की कभी न कभी मैं पुनः लौटकर आऊंगा । हमारे स्कूली जीवन की घटनाओं का कोई न कोई किस्सा हमेशा मेरी पत्नी और दोनों बच्चे बहुत ही दिलचस्पी से सुनते है और उन घटनाओं के बारे में ऐसा पूछते है कि मानों वह भी उन पलों में शामिल हो ।

मुझे तो लगता है कि स्कूली जीवन में रोज कोई न कोई घटना होती थी, वास्तव में हर दिन होली थी, रात दिवाली थी । मैं और योगेश जब कभी फुरसत के पलों में स्कूली समय को याद करते है तो स्कूली जीवन की नाना प्रकार की बातें हम दोनों को रोमांचित कर देती है । रोचक प्रसंग इतने हैं कि उनकी व्याख्या नामुमकिन है । स्कूल की फायर ब्रिग्रेड की रोमांचकारी घटना, जिसमें स्कूल लग जाने के भय से चलती फायर ब्रिग्रेड से 9–10 दोस्तों का कूद कर चोटिल होना वास्तव में अकल्पनीय था । स्कूली जीवन में मस्ती के वह दिन गांधी सभा गृह में कृष्णा जन्माष्टमी उत्सव मनाना तो श्री जगनाथ पहाड़ी का गांधी सभा गृह में दिल को छू लेने वाला प्रवचन, हम लोगो के प्रयास से 4–5 वर्षो से शाला के बंद स्नेह सम्मेलन को पुनः चालू करवाना इन बातों को लिखने पर जगह कम पड़ जायेगी पर सारी यादें खत्म नहीं होगी ।

हमारे सभी शिक्षिकों का कोई स्टाईल था... श्री के.पी.राव का रूतबा तो, श्री एम.एन.लाल का मुर्दा का डायलाग तो, श्री डी.आर.यादव, श्री जी.एस.श्रीवास्तव, श्री एन.के.श्रीवास्तव के पढ़ाने की दक्षता वहीं स्व.श्री भीतमांगे, श्री गजानंद तिवारी , श्री एम.एल हरिहारनों व स्व.श्री जे. के.राव के पढ़ाने का निराला दोस्ताना अंदाज आज भी लगता है मानों अभी अभी की बात है और हफ्ते में एक दिन शुक्रवार को लगने वाला बापू (श्री यादव) सर का अंतिम पिरियड तो सभी को याद होगा, उस पिरियड का सन्नाटा और सन्नाटा को तोड़ती सर की कड़कड़ाती आवाज में सर का छात्राओं को पोट्टी कहकर बुलाना मिश्रित युगल आश्चर्य था ।

1977 में 11 वीं के बाद पल दर पल 33 वर्ष ओझल हो गये, हम सभी इधर उधर बिखर गये मैं तो थोड़ा अपने को इस मामले में खुश किस्मत मानता हूँ कि बहुत से मित्रों की मुलाकात किसी न किसी कारण से होती रही है, इन्ही गुजरते पलो के बीच यह सामाचार सुनना कि मित्र रविन्द्र पटनायक नही रहे मन को दुख हुआ लगा कि इतनी जल्दी... खैर यह लेख लिखते लिखते आगे बढ़ा, तो याद आया दो वर्ष पूर्व योगेश बागड़ी की दुकान में एलिस से 30–31 वर्ष बाद मुलाकात होने का, वह क्षण बहुत ही रोमांचकारी रहा, हम तीनों स्कूली जीवन की बात करते रहे और डेढ़–दो घंटा कब बीत गया पता ही नही चला फिर आया वह रोमांचकारी 2010 मार्च का रविवार जब 24 दोस्तो का होटल सबरस में इक्ट्ठा होना और 9 मई के दिन इस कार्यक्रम के लिये फाईनल होगा । वाकई बहुत ही मजेदार दृश्य था, सभी बहुत खुश थे, एकाएक एक दूसरे से मिल रहे थे, कोई किसी की आवाज से पहचान रहा था तो कोई किसी को उसके व्यवहार से समझने की कोशिश कर रहा था, परन्तु एक चीज सबमें थी जोश, अपनो से मिलने का जोश। अंत में इस रोमांचाकारी पलों को जेहन में समेटे हुये इस आस के साथ लिखना बंद कर रहा हूं, कि हर देश की सरहद होती है, पर दोस्ती के लिये कोई हद नही होती, एक दोस्त आपके सामने खुली किताब होता है, वह वो भी सुन लेता है जो आप नही कहते पर कहना चाहते है, इन्ही विश्वास भरे पलो के साथ कि हम फिर मिलेंगे ...



अजय पांडे



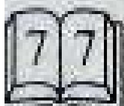
फलाई ओव्हर की चपेट में आकर मलबे के ढेर में परिवर्तित हो चुके लेबोटरी कक्ष और गांधी सभा गृह । मेरे मन उदासी के बीच पुरानी यादों में कुछ खुशनुमा पर,



"स्मृतियों के झरोखों से"
यादों में घूमने लगती है, शाला की दोपहर
शरारत और मस्तीभरा, वो प्यारा मंजर,
बाहर लगने वाला वो, बच्चों का मेला,
गुड़ पपड़ी और देवजी भाई का चाट का ठेला,
फूटे–चने, बेर, जाम, गंगा इमली के ढेर,
खट्टी इमली, खट्टा कैथा और चाशनी बेर,
छीन झपट कर यारों से, उनकी चीजें खाना,
कक्षा से गोल मार कर, वो पिक्चर जाना,
स्याही छींटना, चाक फेंकना, आम थी शरारत,
राकेट, हवाई जहाज फेंकना, रोजकी थी आदत,
सहपाठियों को समझते थे, खतरनाक बिजली
डेस्क में केंवाच डालकर, देते थे खुजली,
उनकी शिकायतों से सबको, लगता भी था डर,
कहीं सोंट न दे हमको, के.पी.साव सर,
मुर्दार सिंग, मुर्दे कहते थे, सबको लाल सर,
छात्रों के सर पर टक–टक, बजाते थे डस्टर,
जी.एन.तिवारी सर का वो, हंसते–हंसाते पढ़ाना,
पहले बनावटी नाराजगी, फिर ठहाके लगाना,
पिकनिक और गेदरिंग की खूब, होती थी मस्ती,
कभी होती थी दिलेरी, कभी मौका–परस्ती,
उन मस्त लम्हों को हम, कभी न भूल पाएंगे,
मौका मिला तो दौड़कर हम, फिर बस्ता उठाएंगे,
बीबी बच्चों का भी साथ में, एडमिशन कराएंगे,
प्रभु हमें फिर बालक बनादे, हम शाला जाएंगे...

दोस्तो,

साथ गुजारे उन अविस्मरणीय पलों को कागजों में पूरी तरह उतार पाना बहुत कठिन है, लेकिन उन्हें याद करने और बांटते रहने का अवसर हम खोजते रहेंगे और ऐसी उम्मीद है, हम अब मिलते रहेंगे ....



मनोज गुप्ता



क्या भूलूं क्या याद करूं ...



कोई कहे ऐसी है जिन्दगी
कोई कहे वैसी है जिन्दगी
मैं तो बस इतना जानूं यही मानूं
थोड़ी तेरे जैसी है जिन्दगी
थोड़ी मेरे जैसी है जिन्दगी....

जिंदगी के फलसफे सुलझाते – संवारते कब जिंदगी का पचासवाँ बसंत दस्तक दे गया, पता ही नही चला । सपनों को सार्थक न कर पाने की कसक दिल के कोने में भले ही टीस देती रहे, लेकिन जिन्दगी के अनुभवों का खजाना हम सब के पास समान रूप से है और यही उपलब्धियाँ आगे का जीवन सुगम, सहज और सरल बनाएंगी ।

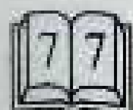
अतीत की स्मृतियाँ आज भी अवचेतन मन में जीवंत है । प्रायमरी की सहपाठी अरूणिमा ग्यारहवीं में साथ रही और ग्यारहवीं में मित्र था पीटर पाल । मनोज तथा विमल गुप्ता आज भी सुख दुख के मेरे संगी – साथी हैं । इसे सुखद आश्चर्य ही कहूँगा कि एक ही शहर में रहते हुए कई सहपाठियों से 33 वर्ष बाद मिला जिनमें वंदिता और अजय भी शामिल हैं। ललित, योगेश, अनिल, राजेन्द्र, अशोक, रविशंकर, रेखा, धरमचंद, दर्शन सिंह आदि से यदाकदा मुलाकात होती रही, लेकिन इतने वर्षों बाद सत्यरंजन से गले मिलना सुखद अनुभूति है । दीपक दा एवं अन्य सहपाठियों से मिलने आतुर हूँ ।

मेरी तरह आप भी सहमत होंगे कि उन तमाम यादों को लिपिबद्ध करने में यह पन्ना छोटा पड़ता है और शायद यह स्मारिका भी, आज मुझे वे गुरूजन याद आ रहे है जिनके आशीर्वाद से हम अपना भविष्य गढ़ सके । वे गुरूजन और सहपाठी भी जो समय के कालचक्र में विलीन हो गए । पुराने सहपाठियों से मिलने की कल्पना मात्र से मन आनंदित और रोमांचित हो उठता है और यही हमारे इस आयोजन की ताकत भी है और अंत में एक कवि की पंक्तियाँ याद आ रही है ।

आदमी
मरने के बाद कुछ नहीं बोलता,
आदमी
मरने के बाद कुछ नही सोचता,
कुछ नही बोलने और कुछ न सोचने पर
आदमी
मर जाता है...



बैच 77 का यह आयोजन आदमियत को जिंदा रखने का एक छोटा सा प्रयास है और कुछ नही। 09 मई 2010 का दिन हमारे जीवन की धरोहर बने इन्ही सद्‌कामनाओं के साथ प्रतिक्षारत...



राजेन्द्र वर्मा

यादें ....



जब मुझे पता चला कि स्कूल के पुराने सहपाठियों से मिलने की योजना बन रही है तो मै अनायास ही पुरानी यादों में (जो कि शायद जिंदगी की बेशकिमती धरोहर हैं) चला गया और पुरानी हिन्दी फिल्मों की भांति मेरे जेहन में भी फ्लैश बैक चलने लगा ...

सन् 1974 में मै भोपाल से राजनांदगांव आया था, चूकि मेरे चाचा भी इसी स्कूल में पढ़े थे, इसलिये मेरा एडमिशन भी यही करा दिया गया । भोपाल में मैं सेंट फ्रांसिस स्कूल में पढ़ता था, जिसमें पढ़ाई का माध्यम पूर्णतः English में हुआ करता था स्वभाविक रूप मेरी भी ध्दहसपी अपनी क्लास के अन्य सहपाठियों से अच्छी थी, उन दिनों में English में बात करना बहुत बड़ी बात हुआ करती थी, इस English के चक्कर में मेरा जलवा था। मेरे इस जलवे में चार चांद एक किस्से ने और लगा दिया ये किस्सा भी आपको बताता हू, – हुआ कुछ ऐसा की एक दिन श्री गजानंद तिवारी जो कि हिन्दी के टीचर थे ने मुझसे पूछा कि क्यों तुम किशोरी लाल के भतीजे हो तो मैने कहा हां, इस घटना के बाद मैने देखा कि मेरी क्लास में पूछ परख कुछ ज्यादा ही हो गई है और मुझे सबसे सामने वाली बेंच में बैठने की जगह मिल गई । मुझे कुछ अटपटा सा भी लगा, लेकिन मैने सोचा होगा कुछ चलो छोड़ो हमको क्या करना है । लेकिन दोस्तों मेरा ये जलवा ज्यादा दिन नही चला, अजय पांडे (जो कि मेरा आज भी दोस्त है और उनका परिवार शुरू से राजनीति से जुड़ा रहा है) ने मुझसे पुछ ही लिया कि मैं क्या किशोरी लाल शुक्ला का भतीजा हूं जो कि उस समय मिनिस्टर हुआ करते थे, मैने बोला नही यार मेरे चाचा का नाम भी किशोरी लाल शाह है । बस क्या था पहली बेंच से वापस मुझे सबसे लास्ट बेंच में बैठा दिया गया । ऐसे ही बहुत से किस्से एक के बाद एक किसी चलचित्र के रूप में मेरे आँखो के सामने चलते रहे । सभी की चर्चा करूंगा तो यह लेख बहुत ही लम्बा हो जायेगा और के.के.बागड़ी इसको मैगजीन में छपने ही नही भेजेगा । अपनी कलम को यही विराम देते हुये अपनी भावनाओं को कुछ ऐसे व्यक्त करना चाहता हू:–

एक दिन जिंदगी ऐसे मुकाम पर पहुंच जायेगी, दोस्तो
वो दोस्ती तो सिर्फ यादों में रह जायेगी।
हर कप कॉफी याद दोस्तों की दिलायेगी,
और हंसते – हंसते आंखे नम हो जायेगी।
आफिस के चेम्बर में क्लास रूम नजर आयेगा,
चाहने पर भी Proxy नही लग पायेगी ।
पैसा तो बहुत होगा पर उसे लूटाने की वजह ही खो जायेगी।
जी ले इस पल को मेरे दोस्त,
क्योंकि जिंदगी इस पल को फिर से नही दोहरायेगी,
और ऐसे ही एक दिन जिंदगी की शाम हो जायेगा ।



विजय शाह
(रायपुर)



यादें...



जीवन में कई वर्षों के बाद, मेल एवं एस.एम.एस के युग में कुछ लिखना है।

कठीन सा लगने वाला यह कार्य काफी आसान होगा ऐसा प्रतीत हो रहा है। कागज पर पेन ऐसे चल रही है, जैसे कोई अदृश्य शक्ति मेरे हाथों को संचालीत कर रही है। कौन है ये शक्ति, क्या है 11 वीं का वो वर्ष सोचे तो जवाब एक ही है, हमारे जीवन का वो महत्वपूर्ण एवं अमूल्य समय जिसे कोई चुरा नहीं सकता अथवा मिटा नहीं सकता। जिंदगी में शिक्षा के 18 वर्षों में केवल 11वीं का ही विशेष महत्व क्यों है ? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका जवाब अनेकोएक है शायद, हमारी जिंदगी में इसका जवाब शब्दों में नहीं दिया जा सकता । जन्म के साथ ही भगवान अनेकों रिश्ते तय कर देता है। उसकी संरचना लाजवाब हैं, उसके बनायें रिश्ते पवित्र एवं जीवनदायी होते हैं पर शायद इंसान द्वारा अपने लिये तय किये गये रिश्ते भी अत्यंत ही महत्वपूर्ण होते हैं । रिश्तेदार हम नहीं चुनते, पर दोस्त हम चुन सकते हैं संस्कार एवं मां-पिता जी द्वारा ही दी गयी शिक्षा से महत्वपूर्ण इंसान को कुछ बनाने में दोस्त की विशेष भूमिका होती है।

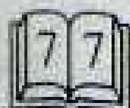
कई वर्षों से बहुप्रतिक्षित सपना हकीकत में बदलने जा रहा है, अजय, ललित, सत्यरंजन, विमल, राजेन्द्र वर्मा और राजेन्द्र बहादुर के साथ शुरू किये जाने वाला यह प्रोजेक्ट अब पुरा होने जा रहा है। सभी सहपाठियों का सहयोग एवं अपार उत्साह देखते ही बनता हैं। 33 वर्षों पश्चात् भी इतनी आग हमारे दिलों में है जिसकी ताप हमें ठंडकता का अहसास दिला रही है। भागदौड़ में जिंदगी का अधिकतर हिस्सा हमने कब जी लिया पता ही नहीं चला । मुट्ठी में रेत के फिसलने जैसी हमारी जिंदगी चल रही है। 9 मई के पश्चात् इनकी यादें एवं संस्मरण हमारी जिंदगी को उर्जा देती रहेगी। 9 मई को यादगार बनाने का प्रयास यथासंभव जितना हो सका सबने मिलकर किया पर यह तो शायद शुरुवात है, आगे चलकर भी .... फिर मिलेंगे।

कृष्ण कुमार वाजपी



सभी सहपाठी दोस्तों को सलाम करता हूं,
आज का दिन आप सभी के नाम करता हूं।
किसी का बिजनेस होगा, तो कोई टीचर होगा,
कोई होगा बी.एस.पी. कर्मचारी तो कोई फोटोग्राफर भी होगा।
मैं विद्युत मण्डल कार्यालय में काम करता हूं।
कभी स्कूल, कभी कॉलेज, कभी शादी, कभी बच्चे,
बहुत दौड़ा मैं जीवन भर, अब आराम करता हूं।
सभी सहपाठी दोस्तों मैं सलाम करता हूं।

अशोक कुमार सोनी





अकड़

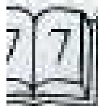


रात कुछ देर तक जागे थे हम, सो खिड़की से निगोड़ी सूरज की धूप, ठीक चेहरे पर पड़ने लगी थी । तभी बेगम ने आकर जगाया "लो जी, अब उठो भी, चाय की प्याली लिये कब से खड़ी हूं ।" हम रात की खुमारी को बलाए ताक रख करवट बदले बेगम की ओर मुखातिब होने पर मुंह से हाय निकल कर रह गया । कुछ देर यूं ही एक टक देखते रहे उन्हें । बेगम ने फौरन कहा हाय अल्लाह क्या बूढ़े हो गये, दाढ़ी पर बर्फ की चादर पड़ने लगी,सिर पर चाँद निकल आया, मुई जवानी है आपकी कि सर चढ़कर बोलती है । हाय अल्लाह और कब तक यूं ही देखते रहोगे – चाय ठंडी होने लग पड़ी है, अब के मरी तो दूसरी ले आना और देखते रहना रात दिन । शरारत तो कोई तुमसे सीखे, आँखें मटकाते हुए बेगम ने पूछा सच क्या मैं तुम्हें इतना भाती हूं।

अरे करम जली माटी मिले तेरे हुस्न को । अकड़ी हुई गर्दन को थोड़ा और झटका लगा । हम है कि गर्दन के दर्द से परेशान थे और बेगम पर हुस्न का तिलिस्म छा रहा था । किसी तरह हम उठ कर बैठ तो गये पर अब भी गर्दन थी की एक ओर अकड़ कर खड़ी थी । जिसे हम कल रात हुस्न की मलिका कह रहे थे, आज सुबह उसी से मुंह मोड़े बैठे थे । हाथ से चाय की प्याली ले, हम सुड़कने लगे । बेगम का शक काफूर हो गया । क्या इतनी जल्दी कोई किसी से मुंह मोड़ लेता है ? बेगम कहीं खो गयी है, ठंडी चाय को किसी तरह गुटक हमने तिरछे गर्दन से प्याली बेगम के हाथ में थमानी चाही, हमने सोचा प्याली पकड़ ली गई होगी, पर शीशे के बिखरने की आवाज से पता चला निशाना गलत था । हम क्या करते गर्दन जो अकड़ गई था । बेगम को हमारी तकलीफ का अहसास होने लगा था । झट बोली गरम तवे की सिकाई किये देती हूं– आराम मिलेगा । सुना है करीम मियाँ के टोटके में गजब की तासीर है, मिनटों में दर्द से निजात दिला देगी और अकड़ भी जाती रहेगा।

हम उनकी बातों को अनसुना कर गुसलखाने की ओर बढ़ लिये । किसी तरह दैनिक कार्य से निवृत होकर बाहर आ गये । दफ्तर पहुंचते ही लोग कनखियों से देखते और जैसे ही हम आगे बढ़ जाते कानाफूसी करते । दुआ–सलाम का जवाब तिरछी निगाहों से देते हुए हम अपने मेज की ओर बढ़ने लगे, किसी ने चुटकी ली लगता है गर्दन में कुछ तकलीफ है, हमने कहा हाँ भैये, गर्दन अकड़ गई है । मियाँ ऐसे ही कुछ कम अकड़ते थे, जो गर्दन भी अकड़ा ली । जी में आया साले की जुबान खींच लूं, पर दर्द की टीस ने ऐसा करने से रोक दिया । आफिस की जनानियों को आज का मसखरा मिल गया । फिर क्या था चटखारें ले – ले कर बातें बनाने लगी – हाय मुआ, बुढ़ापे में देवानन्द की चाल हम क्या करते पूरे धड़ को मोड़ कर देखते । वो चुप हो जाती हम खिसयानी हँसी हँस कर टाल जाते । परेशां हम इस बात की जुगत लगाने लगे कि आखिर कैसे इस गर्दन की बला से निजात मिले । किसी ने कहा नाई से गर्दन तुड़वा लो, तो किसी ने कहा उल्टा पैदाइशी की दुलत्ती खा लो या मियाँ नस चटकवा लो और न जाने क्या–क्या । हमने सोचा, हम क्या, थोड़ा अकड़े, लोग परेशान हो गये । लाखों का माल डकार, गले तक भ्रष्टाचार में डूबे नेता बेशर्मी से अकड़े बैठे हैं, आई.जी.साहब कैमरे पर खुल्लम–खुल्ला रंगरेलियाँ मनाते कैद हो गये, तब भी टेलीविजन पर अकड़े बैठे है । कानून और समाज व्यवस्था के जिम्मेदार, थाने में ब्याहता की इज्जत लूट कर थानेदार साहब अकड़ दिखा रहे हैं, उन्हें कोई कुछ नहीं कहता । खैर अकड़ तो बुश भी रहे थे, पर लादेन ने हवाई जहाज क्या दे मारी, सारी अकड़ धुल गई । ऐसा मियाँ सद्दाम की अकड़ भी कम नहीं थी, कई साल तक अकड़ते रहे, पर अंत में खंदक में चूहे से दुबके दाढ़ी नोचते मिले, तो सारी अकड़ रह गई न भैया। बड़े भाई की राह पर ब्लेयर भी अकड़ रहे थे, उनकी भी तूती बजा दी । अकड़ते तो मुर्दे हैं, जिन्दों में अकड़न नहीं होती और यही जिन्दादिली की निशानी भी है । अब जुम्मन मियाँ को ही लें, शादी के पहले खूब अकड़ते थे, पर दो साल बाद अकड़ गई और बच्चों को कांधे पर टाँगे बेगम के पीछे–पीछे चलते हैं ।

नैतिकता तो यही कहती है अकड़ो खूब, अकड़ो पर सामने वाले को आँक कर, वरना, अकड़ना भारी पड़ सकता है । हमें यह बात पते की लगी । जब बड़े–बड़ो की अकड़ बरकरार नहीं रही तो हम किस खेत की मूली। सो हमने भी तय कर लिया चाहे कितनी भी तकलीफ हो और जो भी मशक्कत करनी पड़े हम नहीं अकड़ेंगे । और इस तरह दर्द सहकर भी हम अपनी अकड़ी गर्दन को सीधा रखने का प्रयास करने लगे । पड़ोस के डाक्टर साहब को हमारी अकड़न पर तरस आ गया । झट चार गोलियाँ दे दी । बोले भैया अकड़न और दर्द दोनों चला जायेगा । सज्जन थे बेचारे । छोटे थे पर जीवन की सच्चाई का खूब इल्म था । हमने सलाह मानते हुये दवाई खा ली । दर्द से निजात तो मिल गई पर अकड़ अब भी कुछ बची है, जो जाते – जाते ही जायेगी।



सत्यरंजन कदु



"11 क्लास 1977 की कुछ घटनाएं कुछ यादें"

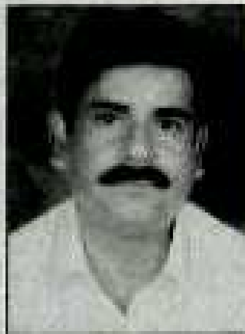


नगर पालिका उच्चतर माध्यमिक शाला, राजनांदगांव के वर्ष 1977 में पढ़ाए समस्त गुरूजनों को मेरा सादर प्रणाम। जिनके आर्शीवाद से आज हमारा भविष्य सुखमय एवं उज्जवल है। 1977 में मेरा शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण अच्छे श्रेणी में पास नहीं हो पाया। फिर भी अ. ययन कार्य कार्यरत रहा, आई.टी.आई., ड्राफ्ट मैन सिविल दो वर्षिय कोर्स भिलाई से पास होने के पश्चात 1983 में Assistent Drafts Man के पद पर मुझे जल संसाधन विभाग में नौकरी प्राप्त हुई। 1991 में Assistent Drafts Man से Drafts Man के पद पर पदोन्नति हुई। कक्षा ग्यारहवी में जो भी सहपाठी भाई साथ में पढ़े सभी अच्छे थे। दोस्तों का एक अपना अपना समूह होता हैं मेरे साथ यादवराम कश्यप, बसंत साहू अभी तक स्मरणीय मित्र रहे। मेरे पिता हाई स्कूल जालबांधा से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, जिनकी मेरे प्रति विशेष कृपा रही आज भी पूजनीय हैं, मेरा विशेष रूची आध्यात्म की ओर रहती है। मेरी कोशिश यही रहती है कि अच्छे-अच्छे महापुरूषों, साधु-संतों का ज्ञान लाभ प्राप्त हो। राजनांदगांव संस्कारधानी शहर है शहर जनता के सहयोग से अच्छे-अच्छे महापुरूषों, साधु-संतो का आगमन होता है, जिससे सभी लोग लाभान्वित होते हैं। मैं भी सभी साधु-संतो के ज्ञान क लाभ लेता हूं। हमारा खानदान कबीर पंथ का अनुयायी है, जिसका प्रभाव हमारे परिवार में अभी भी हैं। 1977 के समस्त विद्यार्थी भाईयों को एक साथ मिलने का आयोजन किया हैं, यह बहुत ही सराहनीय हैं। कार्यक्रम होने से अपनापन एवं नजदीक होने का गर्व महसूस होता है। जिससे एक प्रेरणा मिलती हैं।

मेरी शुभकामनाएँ...

गोविन्द लाल साहू

नई दिशा



मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी होता है, उसे कुछ न कुछ खोज करने की प्रवृत्ति उसके जेहन में रहती है, यह खोज या जिज्ञासापन हम बैच 77 का है। आज परिवार, समाज में बिखरावपन सा दिखाई दे रहा है। लोगों के पास समय का अभाव तथा बदलती परिस्थितियां इस बिखराव का कारण बन गयी है।

लेकिन सब के बावजूद हमारी बैच 1977 द्वारा किया यह प्रयास हम सभी को नजदीक लाने में सहयोग प्रदान कर उसी 16-17 वर्ष की उम्र को एक धागे में पिरोने का कार्य कर हमें 33 वर्षों बाद फिर मिला रहा है।

9 मई का यह दिन हम सभी पुरानी यादों तथा आज की परिस्थितियों के साथ सपरिवार के साथ नये समाज का निर्माण कर एक अनूठा अध्याय जोड़ रहा है। यह प्रयास एक अनूठा अद्भूत प्रयास कहा जाना चाहिये क्योंकि आज जब हम 50 बसंत पार कर चुके है। हम ही नहीं हमारा परिवार इस समाज में जुड़ रहा है। जो एक अनूठा संबंध बनाता नजर आ रहा हैं।

हम बैच 1977 को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहेंगे। "जब सब मिले तो सोच नई होगी, जब सोच नई होगी तो दिशा नई होगी। जब दिशा सही होगी तो हम, समाज, देश आगे बढ़ेगा।

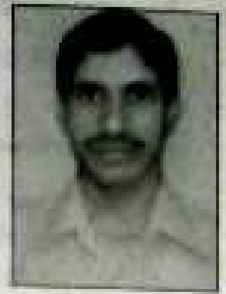


इसी सोच के साथ सभी को शुभकामनाओं के साथ

राजेन्द्र बहादुर सिंह



यादों के साये में



धुंधली होती वह, किशोर वय का जीवन,
बीत चुका था, भीगा-भीगा बत्तीसवां सावन।
अचानक किसी ने छेड़ दिया, यादों के तार,
मिलता था जो पाठशाला में बार-बार।
जब सुना दूरभाष पर, उसकी आवाज,
हर्षित हो गया मन, देख वह प्यार भा अंदाज।
उन्नीस सौ सत्तर के, वे बिछुड़े साथी संगी,
आज फिर से मिल जुलकर बातें करेंगे जंगी।
हम सब मिलकर, पुनः कर सकेंगे 'गुरु दर्शन'
मन व्यथित है उनके प्रति, जिनका हुआ सुक्ष्म रुपांतरण।
है शत्‌शत नमन 'संस्कारधानी' के उस विद्यालय को,
जहां से हमने सीखा है, सफल-जीवन-निर्माण गुर को ।
मन प्रसन्न हो गया देखकर, यह अद्‌भुत मिलन,
बीत चुका था भीगा-भीगा बत्तीसवां सावन।

पृथ्वी पाल साहू,
भिलाई

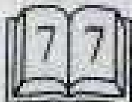
कर्मों का फल



शिव मंदीर में नित्य एक पंडीत और चोर आते थे। पंडित अत्यंत भक्तिभाव से शिवलिंग पर फल-फूल और दूध चढ़ाकर पूजा करता था। वहीं बैठकर शिवस्त्रोत का पाठ करता और घंटो श्रद्धा से शिव ध्यान करता। दूसरी ओर उसी शिव मंदिर में एक चोर भी प्रतिदिन आता था। वह आते ही शिवलिंग पर डंडे मारना शुरू कर देता और अपने भाग्य को कोसता हुआ भगवान को अपशब्द कहता। अपनी विपन्नता का सारा दोष वह भगवान शिव पर मढ़ता और उन्हें अन्यायी व पक्षपाती ठहराता । एक दिन पंडित और चोर साथ-साथ ही मंदिर में आए और अपनी प्रतिदिन की प्रक्रिया दोहराई । काम भी दोनों का साथ ही खत्म हुआ और दोनों का साथ ही बाहर आना हुआ, तभी चोर को द्वार के बाहर सोने की मोहरे से भरी थैली मिली और पंडित के पैर में लोहे की कील से गहरा घाव हो गया । मोहरें मिलने से चोर को अत्यंत प्रसन्नता हुई लेकिन पैर में गहरा घाव होने के कारण पंडित बड़ा दुखी हुआ और रोने लगा। तभी भगवान शिव वहां प्रकट हुए और पंडित से बोलें पंडित जी आज के दिन आपके भाग्य में फांसी लगनी लिखी थी किन्तु मेरी पूजा करके अपने सत्कर्म से फांसी को आपने एक गहरे घाव में बदल दिया । इस चोर को आज के दिन राजा बनकर राज सिंहासन पर बैठना था, किन्तु इसके कर्मों ने इसे केवल स्वर्ण मुद्रा का ही अधिकारी बनाया । जाओ अपना कर्म करों।

वस्तुतः अपना भाग्य निर्माता मनुष्य स्वयं ही होता हैं। यदि वह अच्छे कर्म करेगा तो सुपरिणाम के रूप में बेहतर भाग्य पाएगा और दुष्कर्मों का फल दुर्भाग्य का पात्र बनाता है।

धरमचंद बोहरा



माँ

नाते रिश्ते तप्त दुपहरी
तप्त हवा आतिश अंगारे
नदिया झरने झील समंदर
महकी सी पुरवाई माँ ।
रिश्तों की झीनी चादरें मैंने
हजारों बार उधड़े देखी
चुपके से, हौले से कर देती
जाने – अनजाने तुरपाई माँ ।
बनकर बीवी, बेटी, बहन, पड़ोसन
रिश्तों में उलझती सुलझाती
समझी, मधुर मधुरता लाती
महकी सी पुरवाई माँ ।
बनकर सखी-सहेली, मार्ग-दर्शक
उलझनों को समेटी, सुलझाती
दुखः, पीड़ाओं, तकलीफों को
दूर कराती ममतामयी माँ ।।



श्रीमती अरुणिमा (पचौरी) पटनायक

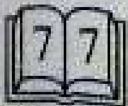


आज तक... संगठन,सामूहिकता,एकता,कौटुंबिकता और मिल– जुलकर रहने



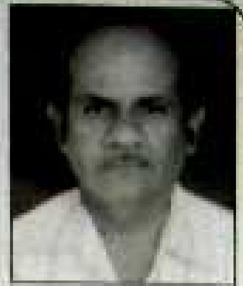
की अभिरुचि, जितनी अधिक विकसित होगी,समाज की समर्थता, सभ्यता उसी कम में बढ़ती जायेगी ।

आज की इन स्वस्थ परम्पराओं का भारी अभाव है । हमें समाज का नया निर्माण करने के लिये प्रचालित अवांछनीय प्रथाओं के विरुद्ध विरोध, करना और स्वस्थ परम्पराओं को स्थापित करना होगा । तभी हम अपने समाज को स्वस्थ एवं सुख – शांति का केन्द्र बिन्दू बना सकने में समर्थ होंगे ।



अखिल मिश्र (राही)

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**पुरुषोत्तम वैंकेटश्वर चौधरी**
व्यवसाय	:	**भू-अभिलेख शाखा दुर्ग में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	18 नवम्बर 1958
विवाह की तिथि	:	04 दिसम्बर 1992
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती हेमलता चौधरी
जन्मतिथि	:	04 अक्टूबर 1969
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	कु.पी.शिल्पा 20 सितम्बर 94 , अनुषा 20 दिसम्बर 95
शिक्षा	:	I.T.I.
स्कूल का यादगार क्षण	:	अशरद अल्वी द्वारा गाए गये स्व. मुकेश के गाने
स्कूल का यादगार मित्र	:	मनोज गुप्ता
मेरी ना पसंदगी	:	झूठ ना बोलना
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक	:	स्व.श्री के.पी.राव
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	मेरी माँ
लेकिन करना चाहता हूं.		
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	यह प्रयास बहुत अच्छा है, स्कूल जीवन की यादें ताजा करेगी ।

Batch 77 (Maths Group)

हमारे वे साथी जिनका विवरण नहीं मिल पाया

1. **एम. देवेन्द्र कुमार**
2. **राजेश्वर सिंह बघेल**
3. **सुखराम गोंड़**
4. **सुमन नेलशन**
5. **शरद कुमार**
6. **धर्मपाल भौतमांगे**
7. **सुदेश कुमार यादव**
8. **विजय कुमार साहू**

''अगर इतनी प्यारी सोच हमारी और तुम्हारी ना होती .
तो दोबारा मुलाकता आपकी और हमारी ना होती ।
तड़पते रहते सच्चे दोस्तों के लिये अगर उस समय .
दोस्ती तुमसे हमारी ना होती ।।

हमारा परिवार ...



अनिल कुमार चौबे



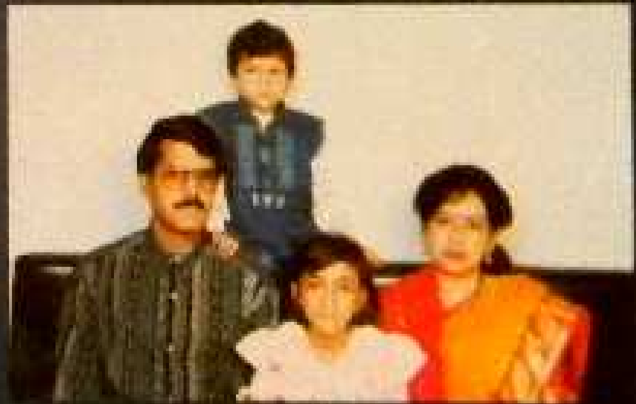
एलिस जेड. मैथ्यू



अनिल सिंह



अजय पांडे



अवधेश श्रीवास्तव



अनिल कुमार मिश्रा



अरुणिमा पटनायक

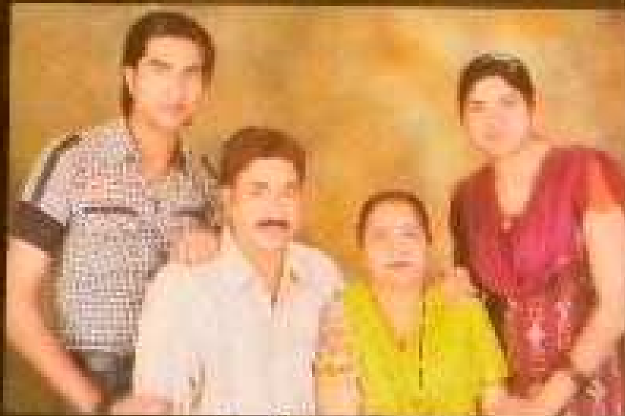
हमारा परिवार ...


धरमचंद जैन


दीपक डे


कन्हैया ओसवाल


अशोक कुमार सोनी


दर्शन सिंह अरगर


पीटर पॉल


नरोत्तम सिंह पवार

हमारा परिवार ...



राजेन्द्र वर्मा



राजेन्द्र बहादुर सिंह



राजेन्द्र सोनी



पृथ्वी पाल साहू



राजेन्द्र श्रीवास्तव



सतीश कुमार मौर्य

हमारा परिवार



रविशंकर श्रीवास्तव



कृष्ण कुमार बागड़ी (योगेश)



ललित ठक्कर



बसंत कुमार साहू



यादव राम कश्यप



उमेश कुमार श्रीवास्तव



रोहित कुमार पंचाल

हमारा परिवार ...


विजय लाल जैन


विजय शाह


विमल कुमार गुप्ता


मनोज गुप्ता (अग्रहरि)


हीरा लाल देवांगन


टीकम राम साहू

हमारा परिवार ...

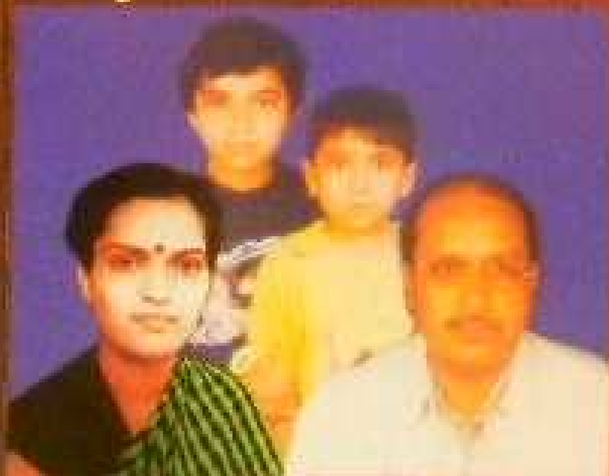

सत्यरंजन भट्टाचार्य


विजयलक्ष्मी असरानी


भूषण लाल साहू


पुरुषोत्तम वैंकटेश्वर चौधरी


गोविन्द लाल साहू


डॉ. दीप्ति शर्मा


के.के. श्रीवास्तव

भूली बिसरी यादें....









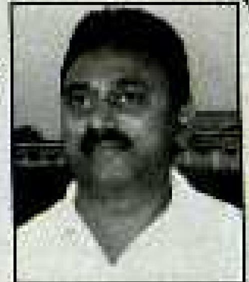
तब और अब

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**एलिस जेड. मैथ्यू**
व्यवसाय	:	**सहायक शिक्षिका**
जन्मतिथि	:	24 दिसम्बर 1960
विवाह की तिथि	:	**23 मई 1988**
जीवन साथी का नाम	:	डॉ. अनिल जेड. मैथ्यू
जन्मतिथि	:	2 नवम्बर
जीवन साथी का व्यवसाय	:	एसोसियेट प्रोफेसर
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	टी.जेड मैथ्यू (आशीष) 22 नवम्बर
ईमेल		anilmathew54@gmail.com
शिक्षा	:	बी.एस.सी.एम.ए., बी.एड.
स्कूल का यादगार मित्र	:	अरूणिमा, वन्दिता, रेखा
मेरी नापसंदगी	:	अन्याय
मेरी रूचि (हॉबी)	:	कुकिंग (पाककला)
मेरा पसंदीदा कलर	:	बॉटल ग्रीन, पिंक
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव, श्री एम.एन.लाल, स्व.श्री के.पी.साव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	प्रभु को प्यार करना और उनके बताए मार्ग पर चलना
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	प्रभु यीशु मसीह
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	अच्छी परिकल्पना और सोच है, मिलते रहना चाहिये

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अजय पांडे**
व्यवसाय	:	**संचालक, पांडे ब्रदर्स/पांडे बुक डिपो**
जन्मतिथि	:	28 अक्टूबर 1960
विवाह की तिथि	:	23 मई 1987
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती सरला पांडे
जन्मतिथि	:	13 सितम्बर 1968
जीवन साथी का व्यवसाय	:	ग्रहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	कु. मानसी 13 / 4 / 91, कु.पंशिका 24 / 9 / 97
ईमेल	:	ajay.pandeyuha@yahoo.com
शिक्षा	:	एम.एस.सी.(Maths) एम.ए.(Pol.), एल.एल.बी.
स्कूल का यादगार क्षण	:	स्कूल में प्रथम बार प्राचार्य श्री के.पी.साव एवं पी.टी.आई. श्री अरूण गौतम सर के साथ शाला के मंच से स्कूल की Prayer कराना।
स्कूल का यादगार मित्र	:	योगेश बागडी, अनिल चौबे, राजेन्द्र बहादुर, विमल गुप्ता,ललित ठक्कर,राजेन्द्र वर्मा
जीवन का यादगार क्षण	:	अचानक मां की तबीयत खराब होना
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	माता--पिता का निधन
मेरी नापसंदगी	:	दूसरे को दुख पहुंचाने वाली निंदा
मेरी रूचि (हॉबी)	:	क्रिकेट
मेरा पसंदीदा कलर	:	क्रीम
मेरा प्रिय शिक्षक	:	स्व.श्री के.पी.साव, स्व.श्री राम लाल भौतमांगे
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	हमारे परिवार की उन्नति तथा हमारे से संबंधित सभी लोगों की उन्नति
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	"मॉं"
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	अच्छी Service करना चाहता था, किन्तु बिजनेस मैन बन गया
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	यह कार्यक्रम मन को छू ले और इसकी प्रेरणा से भविष्य में मिलते रहें ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अनिल कुमार चौबे**
व्यवसाय	:	**भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	07.दिसम्बर.1960
विवाह की तिथि	:	10 जुलाई 1988
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती सुमन चौबे
जन्मतिथि	:	03.मई.1964
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	[redacted]
ईमेल	:	vaibhavchoubey-25@yahoo.com
शिक्षा	:	हायर सेकंडरी
स्कूल का यादगार मित्र	:	अजय, योगेश, राजेन्द्र, अनिल
मेरे जीवन का यादगार क्षण	:	एन.सी.सी. कैम्प
मेरी रूचि (हॉबी)	:	बागवानी
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव, श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	अच्छा इंसान बनना
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	मेरे पालक

जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका : उच्च शिक्षा ग्रहण करना।
लेकिन करना चाहता हूं

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अनिल सिंह**
व्यवसाय	:	**भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	01.जुलाई.1962
विवाह की तिथि	:	20 जून 1990
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती लता सिंह
जन्मतिथि	:	30.नवम्बर.1965
जीवन साथी का व्यवसाय	:	व्याख्याता (गणित)
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	[redacted]
शिक्षा	:	बी.एस.सी., बी.सी.ए.
स्कूल का यादगार क्षण	:	पिकनिक
स्कूल का यादगार मित्र	:	ललित ठक्कर
स्कूल का यादगार क्षण	:	रायपुर में विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लेना
मेरा पसंदीदा कलर	:	हरा
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	गरीबों की सेवा
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	मेरे पिता
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	प्रतिवर्ष आयोजित किया जाए।

Batch 77 (Maths Group)



नाम :	**राजेन्द्र वर्मा**
व्यवसाय :	**भारतीय स्टेट बैंक में सेवारत**
जन्मतिथि :	23 जनवरी 1961
विवाह की तिथि :	17 मई 1989
जीवन साथी का नाम :	श्रीमती हेमलता वर्मा
जन्मतिथि :	24 मई 1968
जीवन साथी का व्यवसाय :	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि :	क रूली वर्मा 03 सितम्बर 1991 प्रवीण वर्मा 21 सितम्बर 1996
ईमेल	rajendra.verma16@yahoo.com,rajendra_verma@sbi.co.in
शिक्षा :	DCP (POLYTECH)B.Com.,M.A.(HINDI)JAIIB,CIF,AMFI
स्कूल का यादगार क्षण :	वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आना,वार्षिकोत्सव
स्कूल का यादगार मित्र :	मनोज,विमल,अरुणिमा,सत्यरंजन
जीवन का यादगार क्षण :	बिटिया का जन्म
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना :	दीपावली में फटाके से दाहिना हाथ जल जाना,लिख -पढ न पाना
मेरी रूचि (हॉबी) :	योग ध्यान ,आध्यात्मिक साहित्य
मेरी ना पसंदगी :	चुगलखोरी,civic sense से रहित लोग
मेरा पसंदीदा कलर :	आसमानी नीला, क्रीम
मेरा प्रिय शिक्षक :	स्व.श्री के.पी.साव,श्री गजानन तिवारी,श्री मुरलीधर हरिहारनो
मेरे जीवन का उद्देश्य :	आध्यात्मिक जीवन जीना
मेरे जीवन के प्रसशनीय व्यक्ति :	मेरे अम्मा – बाबूजी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका : लेकिन करना चाहता हूँ	योग से रोग दूर करने की निःशुल्क सेवा करना
इस आयोजन पर मेरी सलाह :	आयोजन के बाद भी एक–दूसरे से खुशियाँ–गम बांटते रहें ताकि अगला आयोजन और अधिक आत्मिय हो

Batch 77 (Maths Group)



नाम :	**राजेन्द्र सोनी**
व्यवसाय :	**सी.एस.पी.पी.सी.एल. में कार्यरत**
जन्मतिथि :	20.अप्रैल.1960
विवाह की तिथि :	19 मई 1982
जीवन साथी का नाम :	श्रीमती साधना सोनी
जन्मतिथि :	15 अगस्त 1965
जीवन साथी का व्यवसाय :	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि :	अंकित 26.06.85,31.07.87, पूनम 09.04.90
शिक्षा :	हायर सेकण्डरी
स्कूल का यादगार क्षण :	प्रेक्टिकल लेबोरेटरी
स्कूल का यादगार मित्र :	नरोत्तम पवार
जीवन का यादगार क्षण :	25 वीं वर्षगांठ
मेरी रूचि (हॉबी) :	टी.वी.देखना,पढ़ना
मेरा पसंदीदा कलर :	लाल
मेरा प्रिय शिक्षक :	श्री गजानन तिवारी,एम.एन.लाल
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति :	आर.एल.सोनी
इस आयोजन पर मेरी सलाह :	सहपाठियों द्वारा अच्छा प्रयास

Batch 77 (Maths Group)

नाम	:	**पृथ्वी पाल साहू**
व्यवसाय	:	**भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	18.जुलाई.61
विवाह की तिथि	:	5 मई 1982
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती सोहद्रा साहू
जन्मतिथि	:	16.जून.68
जीवन साथी का व्यवसाय	:	ग्रहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	लीना 12.02.89,चंचल 16.07.90,भावना 15.07.96
घर का पता	:	ली, भिलाई
कार्यालय का पता	:	
मो.नं.–स्वयं		
शिक्षा		
स्कूल का यादगार मित्र	:	ह.से.आई.टी.आई. पी.टी.डी.सी
मेरी रूचि (हॉबी)	:	अनिल चौबे,विमल,दीपक डे
मेरा पसंदीदा कलर	:	धर्म और सेवा
मेरा प्रिय शिक्षक	:	सुनहरा पिला
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	श्री एम.एन.लाल स्व.श्री डी.एस.साव
		सर्वे भवन्तु सुखिनो

Batch 77 (Maths Group)

नाम	:	**राजेन्द्र श्रीवास्तव**
व्यवसाय	:	**जिला एवं सत्र न्यायालय में सेवारत**
जन्मतिथि	:	16.दिसम्बर.1960
विवाह की तिथि	:	08.दिसम्बर.1988
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती नारायणी श्रीवास्तव
जन्मतिथि	:	13.सितम्बर.1961
जीवन साथी का व्यवसाय	:	सहायक प्राध्यापक
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	क्षितिज 24.11.89 [illegible] 23.04.92
		T
शिक्षा	:	स्नातक
स्कूल का यादगार क्षण	:	जब मैं दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ
स्कूल का यादगार मित्र	:	सत्यरंजन भट्टाचार्य
जीवन का यादगार क्षण	:	आतमाबाद बांध, धमतरी की पिकनिक
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	जब मैं परीक्षा में सुबह का पेपर देने से चूक गया और दोपहर के सत्र में शामिल हुआ
मेरी नापसंदगी	:	मौखिक प्रश्नो से
मेरी रूचि (हॉबी)	:	पाककला (कुकिंग)
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	सचिन तेन्दुलकर
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	इंजीनियर बनना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	इस प्रकार का सम्मेलन प्रत्येक शाला व कॉलेज में होना चाहिए ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**नरोत्तम सिंह पवार**
व्यवसाय	:	**विद्युत मंडल में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	01.जुलाई.60
विवाह की तिथि	:	17 मई 1986
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती मधुलता पवार
जन्मतिथि	:	18.जून.64
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	विक्रम सिंह 11.03.87,पूर्वा 21.03.90, विशाल 9.8.98
शिक्षा	:	बी.कॉम
स्कूल का यादगार मित्र	:	विमल,राजेन्द्र सोनी,चंद्रिका
मेरी रूचि (हॉबी)	:	अध्ययन
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन.लाल स्व.श्री डी.एस.साव

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**पीटर पॉल**
व्यवसाय	:	**जल संसाधन विभाग में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	05.मार्च.1957
विवाह की तिथि	:	10.जुलाई.1982
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती प्रभा पॉल
जन्मतिथि	:	05.जनवरी.1964
जीवन साथी का व्यवसाय	:	ब्यूटिशीयन, फिटनेस प्रशिक्षक
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	प्रणय पॉल (06.12.1983) प्रियंका पॉल
शिक्षा	:	सिविल ड्राफ्समेन (डिप्लोमा)
स्कूल का यादगार क्षण	:	क्रिकेट टीम का कैप्टन बनना
स्कूल का यादगार मित्र	:	इकबाल अली
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	मेरे दोनों बच्चों का जन्म
मेरी नापसंदगी	:	किसी की बुराई नहीं करना
मेरी रूचि (हॉबी)	:	क्रिकेट खेलना
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	वृद्धों एवं असहायों की सेवा करना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	श्री एम डी हरिहरनो
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	पोस्ट ग्रेजुएशन
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	भविष्य में भी ये आयोजन होता रहे ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	**कृष्ण कुमार बागड़ी (योगेश)**
व्यवसाय	**व्यवसाय**
जन्मतिथि	27.दिसम्बर.1961
विवाह की तिथि	9 फरवरी 1988
जीवन साथी का नाम	श्रीमती मंजु बागड़ी
जन्मतिथि	29 जनवरी
जीवन साथी का व्यवसाय	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	नेहा 20 अप्रेल गौरव 10 दिसम्बर
	राजनांदगांव
	र
	य
ई-मेल	bagdibrothers@sify.com
शिक्षा	बी.एस.सी. एम.ए., एल.एल.बी.
जीवन का यादगार क्षण	मुंबई में शादी समारोह में लगभग 45 मिनट शाहरूख खान के साथ आमने सामने बैठकर एक ही टेबल में डिनर करना ।
स्कूल के यादगार मित्र	अजय पांडे, विजय शाह, ललित ठक्कर, विमल गुप्ता, अनिल चौबे राजेन्द्र बहादुर, रविशंकर श्रीवास्तव, सत्यरंजन, राजेन्द्र श्रीवास्तव, राजेन्द्र वर्मा, विजय जैन एवं अन्य
स्कूल का यादगार क्षण	1976–77 के वार्षिक समारोह में एक प्रतिभाशाली द्वारा गाया गीत
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	हरियाणा में एक स्कूली वार्षिक समारोह में पंडाल में आग लगने से लगभग 80-100 बच्चे जलकर मर गये।
मेरी नापसंदगी	कोई किसी निर्दोष का जानबूझकर मन दुखाये
मेरी रूचि (हॉबी)	राजनीति एवं क्रिकेट
मेरा पसंदीदा कलर	लेमन यलो
मेरा प्रिय शिक्षक	स्व.श्री के.पी.राव,
मेरे जीवन का उद्देश्य	राजनीति में आकर ऐसी मिसाल पेश करना कि राजनितिज्ञों के बारे में लोगों की धारणा ही बदल जायें।
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	राजनिति में बृजमोहन अग्रवाल एवं जीवन में मेरी दादी मां व मम्मी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	सफल राजनीतिज्ञ बनना, एवं देश में क्रिकेट का संचालन करना प्रयास जारी है
इस आयोजन पर मेरी सलाह	जीवन के इस अमुल्य एवं यादगार पलों को यादों में पिरो लेना ताकि इसकी खुशबु हमेशा महसुस होती रहें।

Batch 77 (Maths Group)

नाम	**कु. वंदिता दुबे**
व्यवसाय	**व्याख्याता**
जन्मतिथि	01.जनवरी.1961
शिक्षा	एम.एस.सी., एल.एल.बी., बी.ई.डी.
मेरी रूचि (हॉबी)	अध्ययन
मेरा प्रिय शिक्षक	स्व.श्री डी.एस.राव
मेरे जीवन का उद्देश्य	विद्यार्थीयों को ईमानदारी से पढ़ाना

Batch 77 (Maths Group)



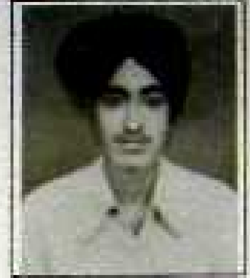
नाम	:	**धरमचंद जैन**
व्यवसाय	:	**ट्रैक्टर पार्ट्स एवं एजेन्सी**
जन्मतिथि	:	15.01.1960
विवाह की तिथि	:	24 जनवरी1984
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती पारस जैन
जन्मतिथि	:	15.03.1963
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	पवन 13.11.1987 , प्रणय 07.07.1990, पूर्वा 24.10.1994
ईमेल	:	amartraktors2007@yahoo.co.in
शिक्षा	:	एल.एल.बी. 2
स्कूल का यादगार क्षण	:	दोस्तो के साथ खेलना मस्ती करना
स्कूल का यादगार मित्र	:	कन्हैया ओसवाल
स्कूल का यादगार क्षण	:	एक पिक्चर को दो शो मे देखा
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	नही
मेरी नापसंदगी	:	ज्यादा बात करने वाले से
मेरी रूचि (हॉबी)	:	क्रिकेट देखना
मेरा पसंदीदा कलर	:	लाल
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	धार्मिक चिन्तन
मेरे जीवन के प्रशंशनीय व्यक्ति	:	माता
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	व्यापार परिवार से पूर्णतः संतुष्ठ हूं
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	प्रति वर्ष आयोजित की जावे

Batch 77 (Maths Group)



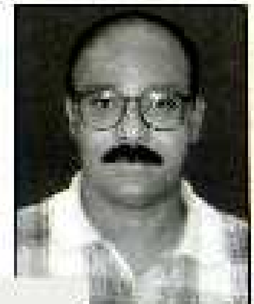
नाम	:	**कन्हैया ओसवाल**
व्यवसाय	:	**स्टोन क्रेशर व्यवसायी**
जन्मतिथि	:	14.अगस्त.1960
विवाह की तिथि	:	29 नवम्बर 1985
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती सीता ओसवाल
जन्मतिथि	:	03.मार्च.1964
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	पायल(01.08.1987) पीयुष(12.07.89) पलाश(24.06.1992)
शिक्षा	:	बी.कॉम
स्कूल का यादगार क्षण	:	पिकनिक आतमाबाद बांध
जीवन का यादगार क्षण	:	मेरे माता-पिता के परदादी एवं परदादा बनने पर, स्वर्ण सीढी का कार्यक्रम किया गया
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	उड़िसा मे आये समुद्री तूफान में फंसा था
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरे जीवन के प्रशंशनीय व्यक्ति	:	मेरे माता पिता
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	ग्रामीण इलाके में शिक्षा का विकास जिसके लिये ग्राम ठेलकाडीह में संस्कार भारती स्कूल का संचालन मेरे एक मित्र के साथ कर रहा हूं ।
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	यह आयोजन सराहनीय है । यह आयोजन जो हो रहा है इसे भविष्य में भी होते रहना चाहिए जिससे सभी आपस में मिलते रहें।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**दर्शन सिंह बरार**
व्यवसाय	:	**जल संसाधन में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	30.जून.1958
विवाह की तिथि	:	18.सितम्बर.1985
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती परवीन कौर
जन्मतिथि	:	13 सितम्बर.1962
जीवन साथी का व्यवसाय	:	बी.ए., एल.एल.बी.
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	अभिजीत कौर (18.7.1987) कंवल जीत कौर(08.12.1988)बलजीत सिंह (29.04.1991)
शिक्षा	:	उच्चतर माध्यमिक
स्कूल का यादगार क्षण	:	चन्द्रिका सर ने अपनी कक्षा में मेरा स्थान(सीट) पीछे से आगे किया था
स्कूल का यादगार मित्र	:	रविशंकर श्रीवास्तव
स्कूल का यादगार क्षण	:	नवमीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना
मेरी नापसंदगी	:	कोई नहीं
मेरी रूचि (हॉबी)	:	पढ़ना, पुराने गीत सुनना,फिल्मे देखना
मेरा पसंदीदा कलर	:	नीला
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	एक ईमानदार व्यक्ति बनना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	अवधेश श्रीवास्तव
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	प्राध्यापक बनना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	यह एक अच्छी पहल है, भविष्य में अच्छे परिणाम मिलेगा ।

Batch 77 (Maths Group)



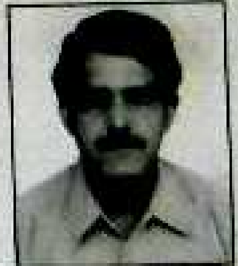
नाम	:	**दीपक डे**
व्यवसाय	:	**भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	05 मई 1959
विवाह की तिथि	:	19 जनवरी 1994
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती अमृता डे
जन्मतिथि	:	07 मार्च 1966
जीवन साथी का व्यवसाय	:	ग्रहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	आदित्य डे 21.11.1994
शिक्षा	:	एम.एस.सी गणित
स्कूल का यादगार क्षण	:	स्कूल में सबके साथ निश्छल भाव से खेलना
स्कूल के यादगार मित्र	:	सभी स्कूल के मित्र
मेरे जीवन का यादगार क्षण	:	Post Graduate होना
मेरे जीवन का संवेदनशील घटना	:	स्कूल में मित्रों से बिछुड़ना (मैट्रिक के बाद)
मेरी नापसंदगी	:	अनावश्यक दिखावा
मेरी रूचि	:	फुटबॉल / क्रिकेट
मेरा पसंदीदा कलर	:	नीला / हरा
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव, श्री एम.एन. लाल, श्री के.पी. साव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	जाने अनजाने में मेरे से किसीका बुरा न हो
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	माता – पिता
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	समाज सेवा (रिटायर्ड के बाद)
इस आयोजन में मेरी सलाह	:	प्रशंसनीय कार्य

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अशोक कुमार सोनी**
व्यवसाय	:	**विद्युत मंडल में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	22 मार्च 1960
विवाह की तिथि	:	17 मई 1989
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती बीना सोनी
जन्मतिथि	:	18.अक्टूबर.67
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	स्वप्नील सोनी, 27.2.92
[redacted]		
शिक्षा	:	ग्यारहवीं, आई.टी.आई.(ड्राफ्टसमेन)
स्कूल का यादगार क्षण	:	कप्तान द्वारा पीठ पर चटाका लगाना
स्कूल का यादगार मित्र	:	नरोत्तम पवार
स्कूल का यादगार क्षण	:	सर्विस लगना
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	विवाह होना
मेरी नापसंदगी	:	कुछ नहीं
मेरी रूचि (हॉबी)	:	फिल्में देखना
मेरा पसंदीदा कलर	:	नीला
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	अच्छा इंसान बन सकूं
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	पिता जी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	मन में विचार आया ही नहीं
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	यह आयोजन दो वर्ष में होना चाहिए ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अवधेश श्रीवास्तव**
व्यवसाय	:	**बी.एस.पी (जूनियर आफिसर)**
जन्मतिथि	:	10 जून 1960
विवाह की तिथि	:	11.दिसम्बर.1988
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती सुषमा श्रीवास्तव
जन्मतिथि	:	11.नवम्बर.65
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	रचना,23.09.89, अंशज 08.11.94
[redacted]		
शिक्षा	:	बी.एस.सी.(गणित)
स्कूल का यादगार क्षण	:	वार्षिकोत्सव एवं प्रयोग शाला
स्कूल का यादगार मित्र	:	रविशंकर
स्कूल का यादगार क्षण	:	आदाभाबाद डैम पिकनिक
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	ग्यारहवीं में कम अंक प्राप्त होना
मेरी रूचि (हॉबी)	:	चित्रकला
मेरा पसंदीदा कलर	:	भूरा
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव, श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	सरल और ईमानदार मानव जीवन
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	मेरे पिता – भाई एवं बहन
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	आगे और पढ़ना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	मेरे सहपाठियों द्वारा अच्छा प्रयास ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अखिल कुमार मिश्रा**
व्यवसाय	:	शाखा प्रबंधक, दुर्ग- राज.ग्रा.बैंक, जालबांधा
जन्मतिथि	:	20 फरवरी 1960
विवाह की तिथि	:	04 जुलाई 1987
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती शांती मिश्रा
जन्मतिथि	:	10 अप्रैल 1962
जीवन साथी का व्यवसाय	:	सिविल कोर्ट में कार्यरत
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	कु.पूजा 7.4.80, प्रियंका 10.12.90, पवन 13.3.93
ईमेल		mak202.60@rediffmail.com
शिक्षा	:	बी.काम
स्कूल का यादगार क्षण	:	प्रतिदिन का "जनगण मन"
स्कूल का यादगार मित्र	:	मनोज गुप्ता
स्कूल का यादगार क्षण	:	खरखरा जलाशय यात्रा
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	मेरी माता जी निधन
मेरी नापसंदगी	:	शराबी
मेरी रूचि (हॉबी)	:	दोस्ती करना, नई जानकारी हासिल करना
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एस.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	सेवा एवं स्नेह
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	श्री विवेकानंद जी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	अध्ययन, इंजीनियर बनना चाहता था, लेकिन नही बन सका, मेरी दो पुत्रीयां इंजिनियर हैं
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	इस आयोजक एवं आयोजन की यादों को जीवंत बनाये रखने के हेतु इसे एक संस्था का रूप प्रदान किया जावे ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**अरूणिमा पटनायक**
व्यवसाय	:	**गृहणी**
जन्मतिथि	:	16.दिसम्बर.1961
विवाह तिथि	:	28 फरवरी 1985
जीवन साथी का नाम	:	श्री डी.मधुकर पटनायक
जन्मतिथि	:	23.जनवरी
जीवन साथी का व्यवसाय	:	पी.एस.यू. सेवारत
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	डी.अनिमेश 19.अगस्त, डी.अरूचि 14 नवम्बर डी.अन्विता 11 मई
शिक्षा	:	एम.एस.सी.(गणित), बी.एड.
स्कूल का यादगार क्षण	:	महसूस जरूर किया, शब्दों में बताया नहीं जा सकता
मेरी रूचि (हॉबी)	:	पढ़ना, संगीत सुनना, कठिन गणित बनाना
मेरा प्रिय शिक्षक	:	स्व.श्री के.पी.साव, श्री डी.आर.यादव, श्री एम.एन.लाल, श्री हरिहरनो
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	आत्म संतुष्टि
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	मेरे पिता, मेरे पति
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	कोई नहीं
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	आयोजकों को धन्यवाद ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**रविशंकर श्रीवास्तव**
व्यवसाय	:	**अति.कार्य.अभियंता (रिटा.)तकनीकी.सलाहकार**
जन्मतिथि	:	05.08.1958
विवाह की तिथि	:	4.6.1989
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती रेखा श्रीवास्तव
जन्मतिथि	:	08.04.1961
जीवन साथी का व्यवसाय	:	असिस्टेंट प्रोफेसर
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	अन्वेष 29.12.1990,अनु 08.06.1994
[redacted]		
ईमेल		raviratlam@gmail.com
शिक्षा	:	ए.एम.आई.ई.
स्कूल का यादगार क्षण	:	आकर्षक व्यक्तित्व के धनी प्राचार्य स्व. श्री के.पी.साव
स्कूल का यादगार मित्र	:	दर्शन सिंह जग्गर
जीवन का यादगार क्षण	:	जब मैं अपनी पत्नि रेखा से पहली बार मिला
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	एक परीक्षा के दौरान राजेन्द्र सोनी को उत्तर बताते समय मुझे मार पड़ना
मेरी नापसंदगी	:	क्षेत्रीय और क्षेत्रीयता की राजनीति करने वाले राजनेता
मेरी रूचि (हॉबी)	:	लेखन , पढ़ना और कम्प्यूटर तकनीकी
मेरा पसंदीदा कलर	:	ब्राउन (भूरा)
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	परिपूर्णता के साथ जीवन का पूरा आनंद उठाना
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	पैराग्लाइडिंग एवम् स्कूबा डाइविंग
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	बहुत अच्छा प्रयास है सफलता की शुभकामनाएं ।

Batch 77 (Maths Group)



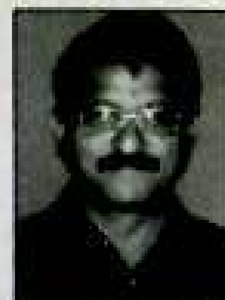
नाम	:	**रोहित कुमार पंचाल**
व्यवसाय	:	**ट्रान्सपोर्ट व्यवसायी**
जन्मतिथि	:	20.अगस्त.1958
विवाह की तिथि	:	30 मार्च 1986
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती सरोज आर.पंचाल
जन्मतिथि	:	29.नवम्बर.1959
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	प्रीति 20.01.1987,धारा 25.08.1988,कु.डॉली 27.11.1991
[redacted]		
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (गणित)
स्कूल का यादगार क्षण	:	भिलाई सर्कस देखने जाना एवं पिकनिक
स्कूल का यादगार मित्र	:	अवधेश श्रीवास्तव
जीवन का यादगार क्षण	:	जब मैंने ट्रक खरीदा
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	पिता जी का देहान्त
मेरी नापसंदगी	:	व्यसन करना
मेरी रूचि (हॉबी)	:	असम्भव कार्य सम्भव करना
मेरा पसंदीदा कलर	:	गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	दूसरों की मदद करना
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	:	गुरूदेव श्री सुधांशु जी महाराज
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	अपने व्यवसाय को ऊंचाई तक ले जाना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	बहुत दिनों बाद कल्पना साकार हुई

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**सतीश कुमार मौर्य**
व्यवसाय	:	**भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	06.सितम्बर.1958
विवाह की तिथि	:	6.मई.1975
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती गौसरहीन मौर्य
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	अजय,आदित्य,एलिस,मोनिका
		वार्ड नं. 39,
शिक्षा	:	हायर सेकेण्डरी
जीवन का यादगार क्षण	:	पढाई के दौरान मेरे चरित्र पर एक शिक्षक द्वारा उंगली उठाना
मेरी नापसंदगी	:	एकाकी जीवन
मेरी रूचि (हॉबी)	:	सत्संग
मेरा पसंदीदा कलर	:	सफेद , नीला
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	परिवार को गरीबी से मुक्त करना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	स्व. पिता जी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	बच्चों को बेहतर वातावरण देना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	बोझिल मन हल्का हो जाता है

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**ललित ठक्कर**
व्यवसाय	:	**भविष्य निधि कंसलटेंट/आर्केस्ट्रा**
जन्मतिथि	:	15 अप्रैल 1961
विवाह की तिथि	:	23 मई 1991
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती मीना ठक्कर
जन्मतिथि	:	26.जुलाई.1968
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	कु.दक्षा (30.09.1993) कु. दिव्या (31.03.1995)
शिक्षा	:	बी.कॉम
स्कूल का यादगार क्षण	:	स्व.श्री बी.एन. राय द्वारा निर्देशित नाटक "उत्सर्ग" में निधि के साथ अभिनय
स्कूल का यादगार मित्र	:	अनील ठाकुर
जीवन का यादगार क्षण	:	बेटी का पिता बनना
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	बगैर उचित कारण के युगांतर स्कूल से निकाला जाना
मेरी नापसंदगी	:	देश की आरक्षण व्यवस्था।
मेरी रूचि (हॉबी)	:	नृत्य निर्देशन
मेरा पसंदीदा कलर	:	स्लेटी (ग्रे)
मेरा प्रिय शिक्षक	:	स्व.श्री के.पी.साव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	अपने सभी परिचितों को अपने व्यवहार से खुश रखना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	मेरे पिता श्री द्वारका दास ठक्कर
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	शिक्षक बनना चाहता था ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**बसंत कुमार साहू**
व्यवसाय	:	**मैनेजर, छ.ग.हस्तशिल्प विकास मंडल**
जन्मतिथि	:	15 जुलाई 1960
विवाह की तिथि	:	01 जून 1990
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती वीणा साहू
जन्मतिथि	:	2 सितम्बर 1962
जीवन साथी का व्यवसाय	:	शासकीय सेवारत,महिला एवं विकास
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	हिमांशु , श्रेया
ईमेल		sahu_basantkumar@yahoo.com
शिक्षा	:	एम.काम, डी.बी.एम, एल.एल.बी., सी.ए
स्कूल का यादगार क्षण	:	शिक्षक एवं सहपाठियों से लगाव
स्कूल का यादगार मित्र	:	अरूण साहू एवं यादव राम कश्यप
जीवन का यादगार क्षण	:	वर्ष 2007-2008 का सेवाकाल
जीवन का संवेदनशील	:	ल्योन इंटरनेशनल फेयर ल्योन पेरिस,फ्रांस में मार्च 17 से 27,2006 तक श्री सोनेघर एवं श्री एम.बी.पोयम के साथ यात्रा ।
मेरी नापसंदगी	:	निकम्मे और बेईमान लोग
मेरी रूचि (हॉबी)	:	बागवानी कृषि, हस्तकला निर्यात
मेरा पसंदीदा कलर	:	सफेद
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव एवं श्री कैलाश गौतम
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	कड़ी मेहनत और ईश्वर पर आस्था
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	लुईस बी.वारेन (यू.एस.ए.)
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका : लेकिन करना चाहता हूं		हैंडी क्राफ्ट निर्यात की संभावना तलाशने यू.एस.ए. की यात्राकरना

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**डॉ. दीप्ति शर्मा**
व्यवसाय	:	**सहा.प्राध्यापक (भौतिक शास्त्र)**
जन्मतिथि	:	17 जून
विवाह की तिथि	:	11 जून
जीवन साथी का नाम	:	डॉ. सतीश शर्मा
जन्मतिथि	:	26 अगस्त
जीवन साथी का व्यवसाय	:	चिकित्सक
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	सौम्या 4 सित. सुमीत 20जन.
शिक्षा	:	पी.एचडी(भौतिक शास्त्र),डिप्लोमा इन एक्युप्रेशर, डिप्लोमा इन आईडेंटिफिकेशन आफ जेम्स
स्कूल का यादगार मित्र	:	विजय लक्ष्मी,अरूणिमा,एलिस,सुसन
जीवन का यादगार क्षण	:	मातृत्व का एहसास
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	पिता जी देहान्त
मेरी नापसंदगी	:	झूठ बोलने वाले
मेरी रूचि (हॉबी)	:	लेखन,नया सृजन करना
मेरा पसंदीदा कलर	:	हरा
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन लाल,स्व. श्री आर.एल.भौतमांगे
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	कुछ कर जाना ताकि जमाना याद रखें
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	मेरे माता पिता
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका : लेकिन करना चाहता हूं		गांवों में शिक्षा को नए रूप में विस्तार देना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	Excellent , Keep it up

Batch 77 (Maths Group)



नाम : **उमेश कुमार श्रीवास्तव**
व्यवसाय : **व्याख्याता**
जन्मतिथि : 05.दिसम्बर.60
विवाह की तिथि : 12 जून 1993
जीवन साथी का नाम : श्रीमती शोभा श्रीवास्तव
जन्मतिथि : 26.अक्टूबर.1967
जीवन साथी का व्यवसाय : उच्च श्रेणी शिक्षिका
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि : शुभम 26.04.94 , उत्कर्ष 23.01.97

शिक्षा : बी.एस.सी.एम.ए.बी.एड.
स्कूल का यादगार मित्र : राजेन्द श्रीवास्तव, सत्यरंजन
जीवन का यादगार क्षण : वार्षिकोत्सव में गाना गाया
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना : 9 वी (अ) में मेरा पहला दिन
मेरी नापसंदगी : जब कोई मुझ पर किचड उछालता है
मेरी रूचि (हॉबी) : किकेट,बैडमिटन खेलना
मेरा पसंदीदा कलर : हल्का हरा
मेरा प्रिय शिक्षक : श्री जी. एस.श्रीवास्तव
मेरे जीवन का उद्देश्य : निरक्षरों के जीवन में रोशनी लाना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति : निःसंदेह मेरी प्रिय मेरी पत्नि

Batch 77 (Maths Group)



नाम : **यादव राम कश्यप**
व्यवसाय : **भूतपूर्व वायु सैनिक,सहा.को.पाय. द.पू.रेल,डोंगरगढ**
जन्मतिथि : 14 जून.1961
विवाह की तिथि : 24 अप्रैल 1984
जीवन साथी का नाम : श्रीमती गिरिजा कश्यप
जन्मतिथि : 15 सितम्बर 1963
जीवन साथी का व्यवसाय : गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि : यशपाल 10.4.5 अंजली 24 अक्टू.86 , रजनी बाला 02 जून 1992

शिक्षा : बी.कॉम.बी.ई. (समकक्ष)
स्कूल का यादगार क्षण : 9वीं कक्षा में ग्रेस मार्क
स्कूल का यादगार मित्र : राजेन्द साहू,समद खान, विमल गुप्ता
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना : मेरी शादी
मेरी नापसंदगी : अहंकार,धोखाधड़ी,अनुशासन हीनता
मेरी रूचि (हॉबी) : जिम्मेदारी में समर्पण , खुशी बांटना
मेरा पसंदीदा कलर : गुलाबी
मेरा प्रिय शिक्षक : श्री अमय सिंह विनोद,श्री अजय गुप्ता,श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य : भाईचारा खुशियाँ बिखेरना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति : एयर चीफ मार्शल आई.एच. लतीफ
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं : इंसानियत को एक सूत्र बांधना
इस आयोजन पर मेरी सलाह : एक बेहद प्रशसनीय कदम है,इसे या इस तरह के आयोजन हमें आपसी भाई चारा और एकता के सूत्र से जोड़ते है, अतःनियमित होते रहना चाहिए

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**विमल कुमार गुप्ता**
व्यवसाय	:	**प्रोफेशनल फोटो/विडियो ग्राफर**
जन्मतिथि	:	12.अप्रैल.1962
विवाह की तिथि	:	4 मई 1993
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती अर्चना गुप्ता
जन्मतिथि	:	14 दिसम्बर 1970
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	भूमिका 17.8.94, भाविका 17.8.94, अर्णव 27.11.99
शिक्षा	:	एम.काम. एम.ए. एल.एल.बी.
स्कूल का यादगार मित्र	:	राजेन्द्र वर्मा, अजय, योगेश बागडी, राजेन्द्र बहादुर,पीटर, सुभाष
स्कूल का यादगार क्षण	:	जन्माष्टमी में रात को प्रसाद की पुड़िया बांधना, वार्षिक उत्सव में अपना पहला कार्यक्रम (नाटक) प्रस्तुत करना
जीवन का यादगार क्षण	:	मेरे जुड़वां बेटियों का जन्म
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	बस का 25 फिट खाई में गिरकर मेरा जीवित बचना
मेरी नापसंदगी	:	झूठ बोलकर बहाना करना
मेरी रूचि (हॉबी)	:	फोटोग्राफी एवं डांस करना
मेरा पसंदीदा कलर	:	हल्का पीला व सफेद
मेरा प्रिय शिक्षक	:	सभी गुरूदेव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	निर्धनों को मदद एवं खुशी देना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	मम्मी एवं पापाजी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	इंजिनियर न बन सका
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	सभी लोग बर्थ डे एवं विवाह तिथि पर एक दुसरे को बधाई देकर याद करें

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**विजय शाह**
व्यवसाय	:	**संचालक, सोबी सेंटर**
जन्मतिथि	:	06.अगस्त.1961
विवाह तिथि	:	30 नवम्बर 1987
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती दीप्ति शाह
जन्मतिथि	:	24.जून.1963
जीवन साथी का व्यवसाय	:	व्यापार
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	जुबिन शाह 8.1.89, जिगर शाह 15.7.92
ईमेल		vijayrpr@gmail.com
शिक्षा	:	बी.काम.
स्कूल का यादगार क्षण	:	शाला में प्रथम दिन
स्कूल का यादगार मित्र	:	एक नही
स्कूल का यादगार क्षण	:	वार्षिक समारोह
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	मित्र ने मुझे मारा
मेरी नापसंदगी	:	जब कोई अपनी बडाई करता है
मेरी रूचि (हॉबी)	:	मित्रों के साथ रहना
मेरा पसंदीदा कलर	:	सफेद
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री गजानन तिवारी
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	परिवार के साथ खुशहाल जीवन बिताना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	:	मेरा मित्र – पप्पू भाटिया
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	कोई कारखाना डालना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	सबको एक शाला गणवेश देना चाहिये, जिसमे सबके हस्ताक्षर हो

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**विजय लाल जैन**
व्यवसाय	:	**कपड़ा व्यवसायी**
जन्मतिथि	:	08 जुलाई 1960
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती मीना जैन
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	विवेक – 30.9.1999
घर का पता	:	[redacted]
[redacted]		
शिक्षा	:	बी.काम.

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	**टीकम राम साहू**
व्यवसाय	:	**लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी में कार्यरत**
जन्मतिथि	:	22.अक्टूबर.1960
विवाह की तिथि	:	25.अप्रैल1984
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती निर्मला साहू
जन्मतिथि	:	11.मार्च.1964
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	ओकेश्वरी 27.5.87, वरूण 20.11.91, टुमेश 22.4.91
[redacted]		
शिक्षा	:	आई.टी.आई.
स्कूल का यादगार क्षण	:	पिकनिक के अवसर पर प्राप्त आनंद दायक माहौल
स्कूल का यादगार मित्र	:	चंद्रिका वर्मा, मनोज गुप्ता
जीवन का यादगार क्षण	:	टपा जलाशय, पिकनिक की यादें
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	कोई नहीं
मेरी नापसंदगी	:	समय का ध्यान न रखने पर
मेरी रूचि (हॉबी)	:	पर्यटन, खाना–पीना
मेरा पसंदीदा कलर	:	लाल
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	मेहनत से ही सफलता मिलती है
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	यह एक अच्छी पहल है ।

Batch 77 (Maths Group)

नाम : **सत्यरंजन भट्टाचार्य**
व्यवसाय : **सहायक महाप्रबंधक (परिचालन) सेल भिलाई**

जन्मतिथि : 08 मार्च 1960
विवाह की तिथि : 27 नवम्बर 1986
जीवन साथी का नाम : श्रीमती अमीता भट्टाचार्य
जन्मतिथि : 10.मार्च 1965
जीवन साथी का व्यवसाय : गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि : माधविका 16.11.87, निरंजन 10.03.94
: क्वा.नं.4 बी सड़क 38 सेक्टर 5 भिलाई नगर जिला दुर्ग
नाई
शिक्षा : बी.एस.सी.गणित ए.एम.आई.आई.एम नैनो टेकनालाजी में स्नातकोत्तर प्रमाण पत्र
स्कूल का यादगार क्षण : सहपाठियों का सहयोग एवं सहायता
स्कूल का यादगार मित्र : राजेन्द्र,योगेश,अजय,उमेश,अरूणिमा,विमल एवं सेक्शन- बी के सहपाठी
जीवन का यादगार क्षण : पिकनिक आदमाबाद डैम
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना : हिन्दी शिक्षक द्वारा मेरी कापी फाड़कर फेंके बिखरे पन्नों को समेटते हुए मैं अपनी कमजोर आर्थिक परिस्थितियों से जोड़ने का प्रयास कर रहा था यह घटना तकलीफदेय थी
मेरी रूचि (हॉबी) : लोगों से प्यार करना स्वयं खुश रहकर लोगों में खुशिया बांटना
मेरा पसंदीदा कलर : स्काई ब्लू
मेरा प्रिय शिक्षक : डी.आर.यादव, गजानन तिवारी
मेरे जीवन का उद्देश्य : सफल प्रेरकवक्ता एवं एक अच्छा इंसान बनना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति : मेरे माता पिता
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका : लेकिन करना चाहता हूं : आध्यात्म की ओर प्रथम कदम

Batch 77 (Maths Group)

नाम : **राजेन्द्र बहादुर सिंह**
व्यवसाय : **शिक्षक**

जन्मतिथि : 1.सितम्बर 1960
विवाह की तिथि : 21.फरवरी 1996
जीवन साथी का नाम : श्रीमती पदमिनी सिंह
जन्मतिथि : 4.अप्रैल.1961
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि : प्राची सिंह 24.2.97, प्रखर सिंह 10.7.98
मो.नं.-स्वयं :
शिक्षा : एम.काम., एम.ए. (इतिहास), एल.एल.बी.
स्कूल का यादगार क्षण : 700 लोगों के सामने पहली बार विज्ञान विभाग में भाषण देना
स्कूल का यादगार मित्र : विमल गुप्ता, अजय पाण्डे, योगेश बागड़ी, अनिल चौबे
जीवन का यादगार क्षण : बचपन में जब 10 वर्ष का था तक एक पिल्ले को नाली के पानी से बचाया वह घटना आज भी याद आती रहती है ।
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना : नक्सली द्वारा हमारे घर पर हमला तथा घर/सम्पत्ति को नष्ट किया जाना
मेरी नापसंदगी : कभी किसी का मजाक न बनाना
मेरी रूचि (हॉबी) : लोगों की जहां तक हो सहायता करना
मेरा पसंदीदा कलर : गुलाबी, हल्का पीला
मेरा प्रिय शिक्षक : श्री जी.एस. श्रीवास्तव, श्री गजानन तिवारी
मेरे जीवन का उद्देश्य : हंसते-हंसते गम को सहनकर जीवन को सुखमय बनाना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति : पिता जी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नहीं कर सका : लेकिन करना चाहता हूं : मुझे सभी खुशी प्राप्त है।
इस आयोजन पर मेरी सलाह : यह आयोजन आपस में जोड़ने में सहयोग करेगा, इस बिखराव भरी जिन्दगी को आपस में जोड़ेगा

Batch 77 (Maths Group)



नाम	**हीरा लाल देवांगन**
व्यवसाय	**टेलर्स व्यवसायी**
जन्मतिथि	10.फरवरी.1958
विवाह की तिथि	24 मई 1983
जीवन साथी का नाम	श्रीमती मधु देवांगन
जीवन साथी का व्यवसाय	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	शिशिर, सौरभ, शिप्रा,
शिक्षा	हायर सेकण्डरी
स्कूल का यादगार क्षण	कक्षा से बंक मारकर फिल्में देखना
स्कूल का यादगार मित्र	भूषण साहू, शेषराम नायडू
जीवन का यादगार क्षण	श्री गजानन्द तिवारी द्वारा पंचवटी पढ़ाना
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	पिट मारते हुए पकड़ा जाना
मेरी रूचि (हॉबी)	फिल्में देखना,गानें सुनना
मेरा पसंदीदा कलर	गुलाबी,आसमानी
मेरे जीवन का उद्देश्य	---------------
मेरा प्रिय शिक्षक	श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति	श्री एम.एन.लाल
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	मैं बड़ा व्यवसायी बनना चाहता हूँ
इस आयोजन पर मेरी सलाह	महान विचार

Batch 77 (Maths Group)



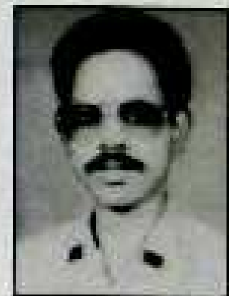
नाम	**मनोज गुप्ता (अग्रहरि)**
व्यवसाय	**इलेक्ट्रानिक्स, इलेक्ट्रीकल्स, फर्निचर्स व्य.**
जन्मतिथि	04.अगस्त.1961
विवाह की तिथि	09.फरवरी.1991
जीवन साथी का नाम	श्रीमती सुधा अग्रहरि
जन्मतिथि	19.जून.65
जीवन साथी का व्यवसाय	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	गरिमा.02.07.92 , रजत 07.03.95
शिक्षा	बी.एस.सी
स्कूल का यादगार क्षण	वार्षिकोत्सव के दौरान मेरे गाये गीत पर बजी तालियों की गूंज
स्कूल का यादगार मित्र	राजेन्द्र वर्मा एवं अनिल मिश्रा
जीवन का यादगार क्षण	प्रथम विदेश यात्रा जिसमें मलेशिया,थाईलैंड, श्रीलंका आदि इस यात्रा ने मुझे प्रकृति से प्रेम एवं कविता लिखना सिखा दिया
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	मेरी पूजनीय माँ का निधन
मेरी नापसंदगी	घटिया फिल्में,टी.वी.पर स्तरहीन कार्यक्रम
मेरी रूचि (हॉबी)	संगीत सुनना,गीत गजल गाना,कविता लिखना
मेरा पसंदीदा कलर	नीला
मेरा प्रिय शिक्षक	श्री जी.एस.श्रीवास्तव श्री डी.आर.यादव
मेरे जीवन का उद्देश्य	वाणी एवं कर्म से परिवार तथा आसपास के माहौल को खुशनुमा बनाना बच्चों को अच्छे संस्कार देना
मेरे जीवन के प्रशंसनीय व्यक्ति	मेरे माता – पिता
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं.	पार्श्व गायन, म्युजिक एलबम बनाना
इस आयोजन पर मेरी सलाह	यह आयोजन हमें पुन जोड़ने और मित्र परिवारों को निकट लाने में कामयाब होगा

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	भूषण लाल साहू
व्यवसाय	:	असिस्टेंट चार्ज मैन (बाल्को) कोरबा
जन्मतिथि	:	12.जुलाई.1958
विवाह की तिथि	:	02.जून.1986
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती लक्ष्मी साहू
जन्मतिथि	:	10.जनवरी.68
जीवन साथी का व्यवसाय	:	गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	अमित 02.09.88 , सुमित 26.03.90
शिक्षा	:	हायर सेकेण्डरी स्कूल सर्टिफिकेट पास
स्कूल का यादगार क्षण	:	दोस्तों के साथ प्रेक्टिकल के दौरान मस्ती
स्कूल का यादगार मित्र	:	हीरालाल देवांगन
जीवन का यादगार क्षण	:	नौकरी प्राप्त होना
मेरे जीवन की संवेदनशील घटना	:	आगे की शिक्षा जारी रख सकूंगा या नही
मेरी रूचि (हॉबी)	:	नृत्य,ड्रामा आदि सास्कृतिक गतिविधियो में हिस्सा लेना
मेरा पसंदीदा कलर	:	क्रीम
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्री एम.एन.लाल
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	नाराज न होना खुश रहना /नाराज न हो खुश रहो
मेरे जीवन के प्रशंशनीय व्यक्ति	:	मेरी माँ (श्रीमती फूलू देवी)
जीवन में ऐसा कार्य जो मै नही कर सका लेकिन करना चाहता हूं	:	उच्च शिक्षा
इस आयोजन पर मेरी सलाह	:	बहुत अच्छा प्रयास है होते रहना चाहिए

Batch 77 (Maths Group)



नाम	:	के.के. श्रीवास्तव
व्यवसाय	:	बी.एस.पी.में कार्यरत
जन्मतिथि	:	15.दिसम्बर.1958
विवाह की तिथि	:	01.जून.1990
जीवन साथी का नाम	:	श्रीमती स्वर्णलता श्रीवास्तव
जन्मतिथि	:	30.अगस्त.1964
जीवन साथी का व्यवसाय	:	(बी.एस.पी.) नौकरी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि	:	कुशात 13.06.1991, मेघा 18.08.1993,पूर्णा 28.05.1996
शिक्षा	:	डिप्लोमा सी.पी.
स्कूल का यादगार क्षण	:	मानव मंदिर से बिना पैसे दिए खाकर निकल जाना
स्कूल का यादगार मित्र	:	प्रदीप अब्राहम
जीवन का यादगार क्षण	:	नौकरी लगना
मेरी रूचि (हॉबी)	:	आध्यात्म
मेरा पसंदीदा कलर	:	सफेद
मेरा प्रिय शिक्षक	:	श्रीमान गजानन तिवारी
मेरे जीवन का उद्देश्य	:	मदद करना

Batch 77 (Maths Group)



नाम : **गोविन्द लाल साहू**
व्यवसाय : **जल संसाधन में कार्यरत**
जन्मतिथि : 25.फरवरी.1959
विवाह की तिथि : 21 मई 1986
जीवन साथी का नाम : श्रीमती उषा साहू
जन्मतिथि : 27.जनवरी.1969
जीवन साथी का व्यवसाय : गृहणी
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि : गरिमा 05.06.1988,तुलीशा 13.04.1990, उपेन्द 11.3.1994

शिक्षा : हायर सेकेण्डरी ,आई.टी.आई मैन सिविल
स्कूल का यादगार मित्र : यादव राम कश्यप
मेरी नापसंदगी : बुरे खान – पान
मेरी रूचि (हॉबी) : आध्यत्मिक कार्य
मेरा पसंदीदा कलर : सफेद
मेरा प्रिय शिक्षक : सम्मानीय समस्त गुरूजन
मेरे जीवन का उद्वेश्य : देश के समस्त नागरिक शिक्षित हो
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति : पूज्य पिता जी
इस आयोजन पर मेरी सलाह : इस प्रकार का आयोजन से गुरूजनों का आशीर्वाद और शिक्षा प्रति पुनः प्राप्त होता रहे ।

Batch 77 (Maths Group)



नाम : **विजयलक्ष्मी असरानी**
व्यवसाय : **संचालक कम्प्युटर इंस्टीट्यूट**
जन्मतिथि : 12 दिसम्बर 1961
विवाह की तिथि :
जीवन साथी का नाम : श्री श्रवण असरानी
जन्मतिथि : 14 अक्टूबर 1959
जीवन साथी का व्यवसाय : इंजीनियरिंग कालेज में प्रोफेसर
बच्चों का नाम एवं जन्मतिथि : वंदना 24.06.87 हंसमख 20.04.91

ईमेल : vijaya.asrani@gmail.com
शिक्षा : बी.टेक (मेटलर्जी)
स्कूल का यादगार क्षण : प्रेयर ग्राऊंड
स्कूल का यादगार मित्र : अरूणिमा
मेरी रूचि (हॉबी) : टी.वी. देखना
मेरा पसंदीदा कलर : पीला
मेरे जीवन का उद्देश्य : आध्यात्मिक जीवन जीना
मेरे जीवन के प्रसंशनीय व्यक्ति : श्री धीरू भाई अंबानी
जीवन में ऐसा कार्य जो मैं नही कर सका : लेकिन करना चाहता हूं : स्वयं का स्कूल स्थापित करना ।
इस आयोजन पर मेरी सलाह : OLD IS GOLD GOLDS ARE TOGETHER

मैं गांधी सभागृह हूँ..

मैं गांधी सभागृह मैं उतना ही पुराना हूँ, जितनी तुम्हारी स्मृतियाँ, मैं स्कूल के दाहिने हिस्से में वर्षों.. वर्षों गुजरते हुए वर्षों से तुम्हारी हर गतिविधियों का मौन साक्षी रहा हूँ....

मेरे कमरों में भौतिक एवं रसायन शास्त्र की प्रयोगशाला जहां मैंने साल-दर-साल विद्यार्थियों को अपना भविष्य सृजन करते हुये देखा है। तुम्हारे लिए भले ही मैं सीढ़ी का एक पायदान हूँ, लेकिन मेरे लिए तो स्मृति की माला की मोती की तरह होता था हर साल।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में तुम्हारी उमंग भरी पद चापों को मैंने वर्षों से सीने में सजोया हुआ है। याद है, तुम्हें कृष्ण जन्माष्टमी का आयोजन और पंजरी की महक, सरस्वती स्थापना के वे खुशियां भरे दिन और विभिन्न प्रतियोगिताओं की तालियों की गूंज आज भी मेरे मन-मस्तिष्क को आल्हादित करती है तुम्हें याद आया कुछ ?

मैं गांधी सभागृह चुपचाप देखता रहा हूँ! जीवन की आपाधापी में सबकुछ पा लेने की अंधी दौड़ में शामिल तुम्हारे पास मुझे याद करने वक्त ही कहाँ था, आज भी कहाँ है, कुछ सुधीजन मुझे याद करने का प्रयास करते हैं, तो मैं बरबस रो पड़ा हूँ...

मुझे याद है 12 अप्रैल 2010 का वह काला दिन जब एक भारी भरकम जेसीबी मशीन मेरी नींव पर प्रहार करने लगी, मैं सिहर गया, मैं कितना चीखा, चिल्लाया और तुम सब तमाशबीन मूक दर्शक बने रहे, मैं अकेला कितना आघात सहता भला, भरभराकर मलबे के ढेर के नीचे दब गया और सिसकता रहा। मैं गांधी सभागृह विकास की चपेट में भले ही अस्तित्वहीन हो गया हूँ लेकिन मैं मरा नहीं हूँ। आज भी तुम्हारी स्मृतियों में जिंदा हूँ और रहूंगा। ढहने से पूर्व मैंने दिल से तुम सबको याद किया था। जाते-जाते तुम सबसे यही कहना चाहूंगा कि...

तुम मुझे भूल जाओ, ये हक है तुमको,
मेरी बात और है, मैंने तो मोहब्बत की है..

तुम्हारा अपना..
गांधी सभागृह





(गांधी सभागृह ढहने देख जैसा Batch 77 के विद्यार्थियों ने महसूस किया- सम्पादक)